पाठ्य पुस्तक

कस्तूरी

6

सॉविनिर पब्लिशर्स प्रा. लि.

TEACHER'S BOOK

कस्तूरी-6

अध्याय - 1 : प्रणति

जबानी बताओ

प्रश्न 1 : अस्थियाँ जलाने का क्या भावार्थ है?

उत्तर : अस्थियाँ जलाने का भावार्थ है स्वयं को संघर्ष की आग में झोंक कर लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जगाना।

प्रश्न 2 : वे लोग कौन होते हैं जो अपनी गर्दन का मोल लिए बिना ही उसे सहर्ष कटवाने के लिए तैयार रहते हैं?

उत्तर : मातृभूमि के सच्चे सेवक वे लोग होते हैं जो बिना किसी प्रकार का मोल लिए उसकी रक्षा करने के लिए अपने प्राण न्योछावर करने अथवा अपनी गर्दन कटवाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

प्रश्न 3 : क्या आप बता सकते हैं कि इस कविता में कवि ने 'अगणित लघु दीप' कहकर किसे संबोधित किया है?

उत्तर : कवि ने 'अगणित लघु दीप' मातृभूमि के उन रक्षकों अथवा सैनिकों को कहा है जिन्होंने बिना किसी प्रकार की इच्छा को मन में रखे स्वयं को खामोशी से इसकी रक्षा के लिए बलिदान कर दिया है।

प्रश्न 4 : देशभक्त और वीर लोग अपने देश के लिए हँसते-हँसते अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। वे किसी से स्नेह की भीख नहीं माँगते। आप ऐसे देश भक्तों के बारे में क्या कहेंगे?

उत्तर : ऐसे देशभक्त और वीर लोग जो अपने देश के लिए हँसते-हँसते अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं तथा मातृभूमि के स्नेह से बढ़कर किसी स्नेह को नहीं समझते वही मातृभूमि के सच्चे सपूत और वीर होते हैं। इतिहास उनकी शौर्य गाथा को सदैव कहता है।

प्रश्न 5 : धरती आज तक किसकी सिंहनाद से सहमी डोल रही है?

उत्तर : धरती वीरों की ललकार अथवा सिंहनाद से सहमी आज तक डोल रही है।

कलम उठाओ

प्रश्न 1 : 'पुण्यवेदी' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : 'पुण्यवेदी' का अर्थ है पुण्य के लिए तैयार की गई भूमि।

प्रश्न 2 : हमें देशभक्तों की जय-जयकार क्यों करनी चाहिए?

उत्तर : हमें देशभक्तों की जय-जयकार करनी चाहिए, क्योंकि देशभक्त ही वे व्यक्ति होते हैं जो देश की रक्षा के लिए अपने जीवन को न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते हैं।

प्रश्न 3 : 'जल-जलकर बुझ गए' कविता की इस पंक्ति का भावार्थ अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर : 'जल-जलकर बुझ गए' कविता की इस पंक्ति का अर्थ है - वे देशभक्त जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ते-लड़ते अपने प्राण दे दिए।

प्रश्न 4 : वीरों की सिंहनाद अर्थात् गर्जना सुनकर मनुष्य तो क्या धारती तक सहम जाती है। इस वाक्य का भाव दो या तीन पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मातृभूमि की रक्षा करने वाले वीरों की ललकार अथवा गर्जना में इतना अधिक जोश होता है कि उसे सुनकर न केवल शत्रु, बल्कि धरती भी खामोश अथवा सहमी हुई-सी दिखाई पड़ती है।

प्रश्न 5 : इस कविता को पढ़कर स्पष्ट कीजिए कि कवि ने इसकी रचना किन लोगों को सम्मान देने के लिए

की है?

उत्तर : कवि ने इस कविता की रचना उन देशभक्तों को सम्मान देने के लिए की है जो किसी से कुछ भी पुरस्कार पाने की इच्छा के बिना ही मातृभूमि की रक्षा के लिए खामोशी से अपने प्राणों की बलि दे देते हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1 : निम्नलिखित का भावार्थ स्पष्ट करें :

उत्तर : कवि का इस कविता के माधयम से कहना है कि जो असंख्य देशभक्त अथवा वीर मातृभूमि की रक्षा के लिए होने वाले संघर्ष में तूफ़ानों में दीपकों की भाँति जल-जलकर बुझ गए हैं अर्थात् शत्रु से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए हैं उन्होंने कभी किसी दिन किसी भी देशवासी से मुँह खोलकर उनसे प्रेम अथवा स्नेह नहीं माँगा है। अर्थात् वे नि:स्वार्थ भाव से मातृभूमि पर न्यौछावर हो गए हैं। कवि अपनी कलम से ऐसे ही महान वीरों की जय-जयकार करने की बात कहता है।

प्रश्न 2 : इनके अर्थ बताओ :

उत्तर : पुण्यवेदी – पुण्य के लिए तैयार की गई भूमि, स्नेह-प्रेम, लू-लपट - गरम हवाओं की लपटें, सिंहनाद - शेर की गर्जना, साखी - साक्षी, खगोल - नक्षत्र।

प्रश्न 3 : प्रणति नामक इस कविता की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित इस कविता की भाषा-शैली अत्यंत सरल तथा स्पष्ट है। उन्होंने पद्यांशों को लिखने के लिए अति लघु पंक्तियों तथा उपयुक्त शब्दों का इस्तेमाल किया है। शब्दों की तुकबंदी की बात करें तो पाते हैं कि उन्होंने शब्दों की तुकबंदी इतने अनोखे ढंग से की है कि कविता में पूरी लयात्मकता का समावेश हो गया है तथा उसे पढ़ने तथा कंठस्थ करने में विशेष रोचकता का अनुभव होता है। कविता में प्रयुक्त उपमाएँ तथा अलंकार कविता में काव्य रस को कूट-कूटकर भरते हैं।

प्रश्न 4 : इस कविता के आधार पर मातृभूमि के प्रेमी कहलाने वाले वीरों के जीवन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित यह कविता देशप्रेम और देशभक्तों के प्रति प्रगाढ प्रेम भाव उत्पन्न करती है। उनके अनुसार देशभक्त अथवा मातृभूमि के सेवक ऐसे वीर होते हैं जो किसी से प्रेम अथवा स्नेह की भीख तक नहीं माँगते। न ही वे मातृभूमि से ऊपर किसी रिश्ते को जानते हैं। वे तो बस मातृभूमि की रक्षा करते हुए खामोशी से अपने प्राणों की बलि देना ही अपना सर्वोपरि दायित्व समझते हैं। उनकी देशभाक्ति का साक्षी कोई और हो अथवा न हो, परंतु सूर्य, चाँद, तारे अवश्य होते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि देशभक्त ही वास्तव में वे लोग हैं जो नि:स्वार्थ भाव से मातृभूमि की सेवा करते हैं।

भाषा-मंच

प्रश्न 1 : निम्नलिखित के वचन बदलिए :

उत्तर : अस्थि – अस्थियाँ चिंगारी – चिंगारियाँलेखनी – लेखनियाँ
कविता – कविताएँ शिखा – शिखाएँ दिशा – दिशाएँ

प्रश्न 2 : दिए गए उदाहरणों के आधार पर निम्न शब्द युग्मों का अर्थ लिखिए:

उत्तर : बारी-बारी – एक-एक करकेबाल-बच्चे – परिवार के सभी बच्चे
लू-लपट – आग की लपटें लाभ-हानि – लाभ और हानि

गली-गली – प्रत्येक गली वन-वन – प्रत्येक वन
आना-जाना – आना और जाना

प्रश्न 3 : निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखो :

उत्तर : आज - कल लघु - गुरु अपना - पराया
देशभक्त - देशद्रोही आग- पानी ठंडा - गरम
इंसान - हैवान धरती -आकाश ऊपर - नीचे

प्रश्न 4 : निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

उत्तर : पुण्यवेदी – पुण्य + वेदी अगणित – अ + गणित
आमोलक – आम + ओलक शिवालय – शिव + आलय
महाराज – महा + राज देवर्षि – देव + ऋषि

प्रश्न 5 : निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्‌भव रूप लिखिए :

उत्तर : अस्थि – हड्‌डी अग्नि – आग चंद्र – चाँद
शिखा – चोटी सिंह – शेर कर्म – काम

परख के मंच पर

प्रश्न 1 : किसी ऐसे देशभक्त के बारे में लिखिए जिससे आप सर्वाधिक प्रभावित हों और उसे अपना प्रेरणा स्रोत मानते हों।

उत्तर : मैं शहीदे आजम कहे जाने वाले सरदार भगत सिंह से सर्वाधिक प्रभावित हूँ। वही मेरे प्रेरणा स्रोत हैं। सरदार भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर, 1907 को लायलपुर जिले के बंगा नामक स्थान पर हुआ था। बड़ा होने पर वे भारत को स्वतंत्र कराने वाले सर्वाधिक प्रमुख क्रांतिकारी बन गए थे। 17 सिंतबर, 1925 को उन्होंने अंग्रेजों से लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए ब्रिटिश पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या कर दी थी। इसी प्रकार 8 अप्रैल, 1929 को उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर केंद्रीय असेंबली में बम फेंककर अंग्रेज़ी सरकार को हिला दिया था। इसी मुकदमें में न्याय का नाटक रचते हुए 1931 में उन्हें राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर चढ़ा दिया गया था। नि:संदेह भगत सिंह और उसके साथियों के बलिदान ने देश में एक जनजागृति पैदा कर दी थी। मैं ऐसे देशभक्त के जीवन से हमेशा-हमेशा प्रेरणा लेता रहूँगा।

प्रश्न 2 : हम सबको अपनी मातृभूमि से प्रेम करना चाहिए। क्या आप बता सकते है क्यों?

उत्तर : हमें अपनी मातृभूमि से प्रेम करना चाहिए, क्योंकि मातृभूमि का स्थान हमारी जननी माँ से भी ऊँचा होता है और अपनी माँ से प्रेम करना तथा उसकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

प्रश्न 3 : सोचिए और बताइए कि अपने समस्त जीवन में हम अपनी जन्मभूमि से क्या-क्या पाते हैं?

उत्तर : हम अपनी जन्मभूमि से वह हर चीज़ पाते हैं जो जीवन जीने के लिए अनिवार्य होती है। जैसे कि अन्न, जल, वस्त्र तथा अन्य सभी वस्तुएँ। ये सभी वस्तुएँ हमें इसी से प्राप्त होती हैं। इसी की मिट्टी में खेल-खेलकर हम बड़े होते हैं। हमें जन्मभूमि हमें स्नेह भी प्रदान करती है। अंतत: हम कह सकते हैं कि जन्मभूमि ही हमारे जीवन की पालक होती है।

प्रश्न 4 : देश प्रेम के बारे में आप क्या सोचते हैं? अपने शब्दों में बताइए।

उत्तर : मैं देश प्रेम को ही प्रेम का सबसे उत्तम रूप मानता हूँ। क्योंकि देश से प्रेम करने वाला आदमी ही मानव हित

में कार्य कर सकता है और सबकी समृद्धि और संपन्नता की सोच सकता है।

रचनात्मक उड़ान

स्वयं कीजिए

स्मरण- परीक्षा

स्वयं कीजिए।

अपना विकास अपने हाथ

प्रश्न 1 : रामधारी सिंह दिनकर की किसी अन्य देशभक्ति पर आधारित कविता को चुनिए तथा उसके भावार्थ को गद्य रूप में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : रामधारी सिंह 'दिनकर' की अन्य देशभक्तीपरक कविता है।

नमन उन्हें मेरा शत बार!
सूख रही है बोटी-बोटी
मिलती नहीं घास की रोटी,
गढ़ते हैं इतिहास देश का, सहकर कठिन क्षुधा की मार,
नमन उन्हें मेरा शत बार!
अद्ध-नग्न जिनकी प्रिय माया,
शिशु-विषण्ण-मुख, जर्जर काया,
रण की ओर चरण दृढ़ जिनके, मन के पीछे करुण पुकार
नमन उन्हें मेरा शत बार!
जिनकी चढ़ती हुई जवानी,
खोज रही है अपनी कुर्बानी,
जलन एक जिनकी अभिलाषा, मरण एक जिनका त्योहार,
नमन उन्हें मेरा शत बार!
दु:खी स्वयं जग का दु:ख लेकर,
स्वयं रिक्त सबको दु:ख देकर।
जिनका दिया अमृत जग पीता, कालकूट उनका आहार,
नमन उन्हें मेरा शत बार!
वीर! तुम्हारा लिए सहारा,
टिका हुआ है भूतल सारा,
होते तुम न कहीं तो कब का उलट गया होता संसार!
नमन उन्हें मेरा शत बार!
चरण भूमि दो, शीश लगा लूँ,
जीवन का बल तेज़ जगा लूँ,

मैं निवास जिस मूक स्वप्न का तुम उसके सक्रिय अवतार!
नमन उन्हें मेरा शत बार!

इस कविता का गद्य-रूप

स्वयं कीजिए।

अध्याय - 2

जबानी बताओ

प्रश्न 1 : सुजान सिंह किस रियासत के दीवान थे?

उत्तर : सुजान सिंह देवगढ़ रियासत के दीवान थे।

प्रश्न 2 : सुजान सिंह ने रियासत की कितने वर्ष सेवा की?

उत्तर : सुजान सिंह ने रियासत की चालीस वर्ष सेवा की।

प्रश्न 3 : सुजान सिंह किस तरह के दीवान थे?

उत्तर : सुजान सिंह ईमानदार, अनुभवशील तथा नीतिकुशल दीवान थे।

प्रश्न 4 : राजा ने सुजान सिंह पर कौन-सी शर्त रखी?

उत्तर : राजा ने सुजान सिंह पर यह शर्त लगाई कि रियासत के लिए नए दीवान की खोज वे स्वयं ही करेंगे।

प्रश्न 5 : दीवानी के पद के लिए कौन-सी योग्यताएँ रखी गईं?

उत्तर : दीवानी के पद के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ रखी गईं :

(क) उम्मीदवार भले ही ग्रेजुएट न हो, परंतु हृष्ट-पुष्ट होना चाहिए।
(ख) उम्मीदवार मंदाग्नि का मरीज नहीं होना चाहिए।
(ग) उम्मीदवार अपने कर्तव्यों को निभाने में निपुण होना चाहिए।

प्रश्न 6 : दीवानी के लिए उम्मीदवारों की सबसे अधिक संख्या किनकी थी?

उत्तर : दीवानी के लिए उम्मीदवारों की सबसे अधिक संख्या ग्रेजुएट युवकों की थी।

प्रश्न 7 : मिस्टर 'अ' की सच्चाई क्या थी?

उत्तर : मिस्टर 'अ' की सच्चाई यह थी कि वह पहले सुबह नौ बजे तक सोए पड़े रहे थे, किंतु अब बहुत सवेरे से ही उद्यान में टहलते दिखाई देते थे।

प्रश्न 8 : एक दिन फ़ैशन वालों ने क्या योजना बनाई?

उत्तर : एक दिन फ़ैशन वालों ने हॉकी का खेल खेलने की योजना बनाई।

प्रश्न 9 : दफ्तर के अप्रेन्टिस की तरह ठोकरें कौन खाने लगा था?

उत्तर : दफ्तर के अप्रेन्टिस की तरह ठोकरें हॉकी की गेंद खाने लगी थी।

प्रश्न 10: गरीब किसान की सहायता करने वाला युवक कौन था?

उत्तर : गरीब किसान की सहायता करने वाला युवक पंडित जानकी नाथ था।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दो :

प्रश्न 1 : सरदार सुजानसिंह ने राजा से क्या विनती की?

उत्तर : सरदार सुजानसिंह ने राजा से विनती की कि उन्होंने उनकी सेवा में अपने जीवन के चालीस साल बिता दिए। अत: अब उन्हें सेवानिवृत्ति चाहिए

प्रश्न 2 : समाचारपत्रों में क्या विज्ञापन दिया गया?

उत्तर : समाचारपत्रों में विज्ञापन दिया गया कि देवगढ़ रियासत के लिए सुयोग्य दीवान चाहिए।

प्रश्न 3 : पंड़ितों तथा मौलवियों को क्या करने का अवसर मिला?

उत्तर : पंड़ितों तथा मौलवियों को भी अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। क्योंकि वे भी देवागढ़ की रियासत में दीवानी के उम्मीदवार के रूप में होने वाली परीक्षा में भाग ले सकते थे।

प्रश्न 4 : मिस्टर 'ब' में क्या खूबी थी?

उत्तर : मिस्टर 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, परंतु आजकल वे बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे।

प्रश्न 5 : कौन-सा उम्मीदवार किताबों से घृणा करता था?

उत्तर : मिस्टर 'ल' किताबों से घृणा करता था।

प्रश्न 6 : रियासत में निराली बात क्या थी?

उत्तर : हॉकी का खेल खेलना देवगढ़ की रियासत में निराली बात थी।

प्रश्न 7 : किसान के वेष में रियासत का कौन-सा प्रमुख व्यक्ति नाले पर बैलगाड़ी लिए खड़ा था?

उत्तर : देवगढ़ की रियासत के वृद्ध दीवान सरदार सुजानसिंह ही नाले पर एक किसान के रूप में गाड़ी लिए खड़े थे।

प्रश्न 8 : युवक ने किसान को दुविधा में फँसे देखकर क्या कहा?

उत्तर : युवक ने किसान को दुविधा में फँसे देखकर कहा कि आप गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाती है।

प्रश्न 9 : सुजानसिंह ने नए दीवान के रूप में किसको चुना?

उत्तर : सुजानसिंह ने नए दीवान के रूप में पंड़ित जानकीनाथ को चुना।

प्रश्न 10: सुजानसिंह ने पंडित जानकीनाथ में कौन-कौन से गुण पाए?

उत्तर : सुजानसिंह ने पंड़ित जानकीनाथ में निम्नलिखित गुण पाए :

(1) किसी व्यक्ति को मुसीबत में देखकर उसकी सहायता करने के लिए तैयार हो जाना अर्थात् उपकार भावना।

(2) साहस, आत्मबल तथा उदारता।

(3) दान तथा धर्म में दृढ़ विश्वास।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1 : 'परीक्षा' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए :

उत्तर : **कहानी का सार :** देवागढ़ रियासत के दीवान सरदार सुजान सिंह बूढ़े हो गए तो उन्होंने राजा से सेवानिवृत्त होने की प्रार्थना की। राजा ने उनके सामने यह शर्त रखी कि पहले वे रियासत के लिए कोई ईमानदार और योग्य दीवान चुनकर उन्हें दें, तभी सेवानिवृत्त हों। सुजानसिंह ने उनकी बात को मान लिया।

सुजानसिंह ने देश के सभी प्रमुख समाचारपत्रों में दीवानी के खाली पद को भरने के लिए विज्ञापन दिए। उन्होंने इस पद के लिए आवश्यक योग्यता उम्मीदवार का ग्रेजुएट न होकर हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ तथा ईमानदार होना रखा। दूर-दूर से लोग इस पद को प्राप्त करने के उद्देश्य से देवगढ़ में आने लगे। देखते ही देखते पंडितों तथा मौलवियों सहित नए फैशन के अनेक युवकों की भीड़ देवगढ़ में जमा हो गई। सरदार सुजानसिंह द्वारा सभी उम्मीदवारों के रहने तथा खाने का उचित प्रबंध कर दिया गया। फिर उनके भाग्य की परीक्षा का खेल शुरू हुआ।

एक दिन नए फैशनवालों ने हॉकी का खेल खेलने का निर्णय लिया। सभी युवक शाम होने तक हॉकी खेलते

रहे। फिर थके-हारे अपने-अपने ठिकानों की ओर लौट पड़े। मार्ग में एक नाले पर एक किसान अपनी बैलगाड़ी को नाले से निकालने की कोशिश कर रहा था। परंतु गाड़ी नाले के बाहर निकल नहीं पा रही थी। जब हॉकी खेलकर लौट रहे युवक नाले के पास आए तो किसान ने उनकी ओर देखते हुए उनसे सहायता मागनी चाही, मगर उनकी जबान से एक शब्द तक न निकल सका।

परंतु फिर भी एक युवक वहाँ रुक गया और उसने उस किसान की सहायता करने का निश्चय कर लिया। उस युवक ने किसान की गाड़ी को नाले से बाहर निकलवाने में पूरी मदद की। वह दिनभर हॉकी खेलकर थका हुआ था, फिर भी उसने अपनी थकान की परवाह न करके उस किसान की सहायता की। किसान उस युवक से बड़ा प्रसन्न हुआ।

यह किसान कोई साधारण किसान नहीं, बल्कि स्वयं सरदार सुजान सिंह थे जो किसान के वेष में दीवानी के लिए आए हुए लोगों की परीक्षा ले रहे थे। उनकी सहायता करने वाला युवक पंड़ित जानकीनाथ था। सभी उम्मीदवारों में एक यही युवक था जो सरदार सुजानसिंह की परीक्षा में खरा उतरा था और दीवानी के पद के लिए सुयोग्य उम्मीदवार था। अत: पंड़ित जानकीनाथ को दीवानी के पद पर चुन लिया गया।

प्रश्न 2 : दीवानी के पद के लिए किन-किन गुणों वाला व्यक्ति योग्य था?

उत्तर : दीवानी के पद हेतु ऐसा व्यक्ति योग्य था जो ईमानदार हो। भले ही वह बहुत अधिक पढ़ा-लिखा न हो। वह अपने कर्तव्य का पालन करने में किसी प्रकार की ढील न करता हो। उसमें पूर्ण आत्मविश्वास और आत्मबल हो। उसका हृदय उदार हो तथा परोपकार के लिए हमेशा तैयार रहे।

प्रश्न 3 : इस कहानी के आधार पर बताइए कि एक उत्तम शासक में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

उत्तर : इस कहानी के आधार पर एक उत्तम शासक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:

(1) राजा के हृदय में दया तथा शरीर में बल होना चाहिए।
(2) वह उदार तथा आत्मबल वाला दानी होना चाहिए।
(3) वह अत्याचारी न हो।
(4) उसकी दान और धर्म में विशेष आस्था होनी चाहिए।

प्रश्न 4 : पंडित जानकीनाथ का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : पंडित जानकीनाथ देवगढ़ की रियासत में दीवानी के पद के लिए आए हुए उम्मीदवारों में से एक थे। वह शारीरिक रूप से जितने अधिक बलशाली थे, मानसिक रूप से उतने ही उदार विचारों वाले। उनकी उदारता तथा दयालुता का परिचय उस समय मिलता है जब वे शारीरिक रूप से जख्मी होने के बावजूद नाले के कीचड़ में घुसकर किसान के रूप में आए सुजानसिंह की गाड़ी को नाले से बाहर निकालने में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त पंडित जानकीनाथ स्थिर चित्त वाले धैर्यवान व्यक्ति भी थे। अत: हम कह सकते हैं कि उनमें एक श्रेष्ठ पुरुष वाले सभी गुण विद्‌यमान थे।

प्रश्न 5 : इस कहानी की भाषा शैली की चर्चा अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : मुंशी प्रेमचंद द्‌वारा रचित इस कहानी की भाषा शैली साधारण, परंतु रोचकता से परिपूर्ण है। इस कहानी में उनके द्‌वारा विविध भाषाओं, जैसे कि अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू आदि शब्दों का भरसक प्रयोग किया गया है। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से कहानी की भाषा में विशेष रोचकता तथा अनूठापन पैदा हो गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने वाक्यों और संवादों को इस तरह से लिखा है कि वे आम आदमी की भाषा से मेल खाते हैं तथा कहानी को सामान्य जन से जोड़ते हैं। अंतत: यही कहा जा सकता है कि परीक्षा नामक इस कहानी की

भाषा-शैली अत्यंत रोचक तथा अनूठी है।

भाषा ज्ञान

प्रश्न 1 : निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

उत्तर : (क) दाग लगना - बदनामी होना। दाग लगने पर जीवन नरक बन जाता है।

(ख) मिट्टी में मिल जाना - बर्बाद हो जाना। बरसात ने सारी फसल को मिट्टी में मिला दिया।

(ग) दिन काटना पहाड़ हो जाना - समय न कटना। छुट्टी के दिन को काटना पहाड़ हो जाता है।

(घ) नाम का रोना - झुठे बड़प्पन की बात करना। नाम को रोने से कुछ नहीं होगा, उदार कर्म करके दिखाओ।

(ड) गहरे पानी में पैठना - गंभीर कोशिश करना। गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलते हैं।

प्रश्न 2 : वचन बदलिए

उत्तर : प्रार्थना – प्रार्थनाएँ अवस्था – अवस्थाएँ नीति – नीतियाँ
योग्यता – योग्यताएँ सेवा – सेवाएँ रेलगाड़ी – रेलगाडियाँ
कोशिश – कोशिशें रात – रातें नाला – नाले

प्रश्न 3 : निम्नलिखित सामान्य धातुओं के व्युत्पन्न रूप लिखिए :

उत्तर : देना – दिलाना, दिलवाना।
रोना – रुलाना, रुलवाना।
खाना – खिलाना, खिलवाना।
उठना – उठाना, उठवाना।
कटना – काटना, कटवाना।
सोना – सुलाना, सुलवाना।

प्रश्न 4 : परीक्षा नामक कहानी से कोई आठ विदेशी शब्द छाँटिए :

उत्तर : दीवान, महाशय, ग्रेजुएट, सनद, एमामे, चश्मा, दफ्तर, अप्रेन्टिस

प्रश्न 5 : निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए :

उत्तर : राजा – नृप, नरेश, प्रजापति वृक्ष – पेड़, पादप, तरु
रात – रात्रि, निशा, रजनी नदी – सरिता, तटिनी, नद

प्रश्न 6 : निम्नलिखित विग्रहों के लिए समस्तपद लिखिए :

उत्तर : अंधा है जो कूप – अंधकूप परम है जो आनंद – परमानंद
आधा है जो पका – अधपका महान है जो देव – महादेव
नीला है जो कंठ – नीलकंठ कायर है जो पुरुष – कापुरुष।

रचनात्मक उड़ान

परीक्षा नामक कहानी से किसी अपनी पंसद के पात्र को चुनिए तथा उसके गुणावगुण का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

स्वयं कीजिए।

परख के पंच पर

प्रश्न 1 : यदि आप प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त होते हैं, तो बताइए देश की गरीब और निर्धन जनता के विकास के लिए क्या-क्या कार्य करेंगे।

उत्तर : स्वयं कीजिए।

प्रश्न 2 : निम्न चित्र को देखिए तथा उसके भावार्थ को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर : उक्त चित्र में एक युवक वृद्ध एवं घायल युवक की सेवा कर रहा है। वह उसके जख्मों पर मरहम लगा रहा है। अत: यह चित्र मानव के उदार, दयालु तथा प्रेम से भरे हृदय का प्रतीक है।

स्मरण परीक्षा

स्वयं कीजिए।

अध्याय - 3

जबानी बताओ

प्रश्न 1 : स्वर्गारोहण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : स्वर्गारोहण से तात्पर्य - स्वर्गवास या मृत्यु को प्राप्त होना है।

प्रश्न 2 : डॉ. हरिवंश राय बच्चन की कौन-सी प्रसिद्ध काव्य कृति का प्रकाशन सन् 1935 में हुआ?

उत्तर : मधुशाला।

प्रश्न 3 : बच्चन जी के ज्येष्ठ पुत्र का क्या नाम है?

उत्तर : अमिताभ बच्चन।

प्रश्न 4 : बच्चन की काव्य कृति 'मधुशाला' का अंग्रेज़ी में किस नाम से अनुवाद हुआ?

उत्तर : 'हाउस ऑफ वाइन' (House of Wine)।

प्रश्न 5 : बच्चन जी की कविताओं की भाषा शैली कैसी है?

उत्तर : बच्चन जी की कविताओं की भाषा सहज और सरल है तथा उनमें कल्पनाशीलता तथा सामान्य बिंबों का समावेश मिलता है।

प्रश्न 6 : बच्चन जी की प्रारंभिक कविताएँ किस प्रकार की प्रेरणा प्रदान करती हैं?

उत्तर : बच्चन जी की प्रारंभिक कविताएँ देशभक्तिपरक भावनाओं से परिपूर्ण हैं तथा राष्ट्रीयता की भावना की प्रेरणा प्रदान करती प्रतीत होती हैं।

प्रश्न 7 : बच्चन जी के व्यवहारिक एवं वैयक्तिक जीवन में सुधार कब आया?

उत्तर : बच्चन जी के व्यवहारिक एवं वैयक्तिक जीवन में सुधार उन्हें इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नौकरी मिल जाने के बाद आया।

प्रश्न 8 : बच्चन जी की पत्नी का क्या नाम था?

उत्तर : बच्चन जी की पत्नी का नाम तेजी बच्चन था।

प्रश्न 9 : बच्चन जी ने भगवद्गीता के आधार पर कौन-सी कृति लिखी?

उत्तर : बच्चन जी ने भगवद्गीता के आधार पर जनगीता नामक कृति लिखी।

प्रश्न 10: बच्चन जी का स्वर्गवास कब तथा कहाँ हुआ?

उत्तर : बच्चन जी का स्वर्गवास सन् 2003 में मुंबई में अपने ज्येष्ठ पुत्र अमिताभ बच्चन के आवास पर हुआ।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1 : हालावाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : हालावाद का अर्थ है, आधुनिक कविता का दौर।

प्रश्न 2 : बच्चन जी को अपनी किस काव्यकृति से सर्वाधिक लोकप्रियता मिली?

उत्तर : बच्चन जी को अपनी मधुशाला नामक काव्य कृति से सर्वाधिक लोकप्रियता मिली।

प्रश्न 3 : बच्चन जी की मधुशाला का अंग्रेज़ी में अनुवाद किन दो व्यक्तियों ने किया?

उत्तर : बच्चन जी की मधुशाला का अंग्रेज़ी में अनुवाद मार्जरी वोल्टन तथा रामस्वरूप व्यास ने किया।

प्रश्न 4 : बच्चन जी की 'निशा निमंत्रण' नामक काव्य कृति का प्रकाशन कब हुआ?

उत्तर : बच्चन जी की 'निशा निमंत्रण' नामक काव्य कृति का प्रकाशन 1938 में हुआ था।

प्रश्न 5 : अपने विवाह के उपरांत बच्चन जी को सुख और संपन्नता का जीवन कब प्राप्त हुआ?

उत्तर : अपने विवाह के उपरांत बच्चन जी को सुख और संपन्नता का जीवन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नौकरी मिलने के उपरांत प्राप्त हुआ।

प्रश्न 6 : बच्चन जी द्वारा रचित निबंधों से उनकी किस विशेषता की झलक मिलती है?

उत्तर : बच्चन जी द्वारा रचित निबंधों से उनकी गंभीर अध्ययन क्षमता तथा सुलझें हुए विचारों की विशेषता झलकती है।

प्रश्न 7 : बच्चन जी के शिल्प पक्ष की विशेषता बताइए।

उत्तर : बच्चन जी का शिल्प अपेक्षाकृत दुर्बल है। इस दिशा में उन्होंने अनेक प्रयास किए हैं। उनके प्रयोग उर्दू के कवियों की तरह-तरह की बहरों में तरह-तरह की ज़मीन पर नज्म कहने की चेष्टाओं के समान हैं ये काव्य की दृष्टि से कम महत्त्व रखते हैं।

प्रश्न 9 : बच्चन जी की कोई पाँच प्रमुख काव्य कृतियों के नाम लिखिए:

उत्तर : बच्चन जी की पाँच प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं - मधुशाला, हलाहल, निशा निमंत्रण, प्रणय-पत्रिका तथा नाथघर।

प्रश्न 10 : बच्चन जी का जन्म कब तथा कहाँ हुआ?

उत्तर : बच्चन ही का जन्म सन् 1907 में प्रयाग में हुआ था।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1 : बच्चन जी की काव्य रचना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : बच्चन जी को हिंदी काव्य-जगत् में 'हालावाद' के प्रर्वतक के रूप में जाना जाता है। वह हिंदी के पहले ऐसे कवि थे जिन्होंने हिंदी कविता को छायावाद से निकाल कर उसे नई चमक तथा लचक प्रदान की। उन्होंने अपनी कविताएँ साधारण भाषा में तथा साधारण बिंबों का प्रयोग करते हुए लिखीं। उनकी कविताओं ने साधारण जन के हृदय को गंभीरता से स्पर्श कर लिया। उनकी अधिकांश कविताएँ पलायनवादी न होकर जीवन की सत्यता पर आधारित थीं तथा जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करने वाली थीं। अत: हम कह सकते हैं कि बच्चन जी की कविताओं ने आम आदमी के वेदनाग्रस्त मन को वाणी प्रदान की।

प्रश्न 2 : बच्चन जी की 'मधुशाला' नामक काव्यकृति का विश्लेषण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : बच्चन जी की 'मधुशाला' नामक काव्यकृति वह प्रसिद्ध काव्य कृति है जिसने काव्य जगत में 'हालावाद' की स्थापना में विशेष योगदान दिया। यह एक ऐसा कविता-संग्रह था जिसमें यौवन का आवेश तो था ही साथ ही दार्शनिक चिंतन का भी भरपूर मात्रा में समावेश था। यह काव्य कृति पाठकों के बीच में इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि इसका 'हाउस ऑफ वाइन' के नाम से अंग्रेज़ी भाषा में रूपांतरण भी किया गया। इस कृति के आधार पर बच्चन जी ने विशेष ख्याति प्राप्त की। इसने जो लोकप्रियता हिंदी पाठकों के बीच पाई उतनी ही लोकप्रियता अंग्रेजी पाठकों के बीच भी प्राप्त की। अत: मधुशाला बच्चन जी की महान काव्य कृतियों में से एक है।

प्रश्न 3 : इस लेख के आधार पर बच्चन जी के जीवन के विषय में बताइए।

उत्तर : बच्चन जी हिंदी के श्रेष्ठ कवियों में से एक थे। उनका जन्म सन् 1907 में प्रयाग उत्तर प्रदेश में हुआ था।

बच्चन जी के जीवन के प्रारंभिक दिन काफी कठोर परिस्थितियों में गुज़रे। उन्हें अपनी पत्नी तेजी बच्चन की बीमारी के कारण काफी परेशानियों को झेलना पड़ा। परंतु 1938 के आसपास उन्हें इलाहाबाद विश्व विद्यालय में नौकरी मिल गई। उसके उपरांत उनके जीवन की परिस्थितियों में विशेष सुधार आया। इसके साथ ही उनके काव्य लेखन में वेदना एवं विक्षुब्धा के स्थान पर हर्ष और प्रसन्नता का समावेश दिखाई पड़ा। बच्चन जी के अपना पूरा जीवन हिंदी साहित्य लेखन को समर्पित कर दिया था। जीवन में चाहें कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न रही हों, उन्होंने लेखन कार्य को रुकने नहीं दिया। उनके ज्येष्ठ पुत्र अभिताभ बच्चन हिंदी सिनेमा जगत के सुविख्यात अभिनेता है। सन् 2003 में उनके निवास स्थान (मुंबई) पर बच्चन जी को देहावसान हो गया।

प्रश्न 4 : बच्चन जी द्वारा लिखी गई कविताओं की भाषा-शैली तथा उनकी लोकप्रियता पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

उत्तर : बच्चन जी को भले ही हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवियों की सूची में स्थान प्राप्त है। फिर भी अन्य कवियों की तुलना में उनकी भाषा-शैली गंभीर रूप से साहित्यिक न होकर अत्यंत साधारण है। उनकी भाषा साधरण भाषा होते हुए भी विशेष रूप से रोचक है। यही कारण है कि आम पाठक भी उनकी कविताओं को सरलता से समझ लेता है तथा उनके अंदर समाविष्ट भावों को आसानी से ग्रहण कर लेता है। अत: हम कह सकते हैं कि बच्चन जी की भाषा शैली साधारण होते हुए भी इतनी अधिक अनूठी थी कि उसने हिंदी काव्य से छायावाद पल्लु छुड़वा कर उसे 'हालावाद' का ताज़ पहनाया।

भाषा मंच

प्रश्न 1 : निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :

उत्तर : जन्म – मृत्यु नई – पुरानी श्रोता – वक्ता
आज – कल यौवन – बुढ़ापा प्रिय – अप्रिय
प्रारंभ – अंत अतीत – वर्तमान कम – अधिक

प्रश्न 2 : निम्नलिखित वाक्यों से क्रिया-विशेषण छाँटकर लिखिए :

उत्तर : (क) धीरे (ख) इधर-उधर (ग) ध्यानपूर्वक (घ) कल

प्रश्न 3 : निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए :

उत्तर : शोभायमान - शोभाय+मान भग्नावशेष – भग्न + अवशेष
अभिशाप – अभि + शाप मधुशाला – मधु + शाला
वेदनाग्रस्त – वेदना +ग्रस्त सतरंगिनी – सत + रंगिनी

प्रश्न 4 : शब्दों को शुद्ध करके लिखिए :

उत्तर : सोभायमान – शोभायमान प्रर्वतक – प्रवर्तक
उर्पयुक्त – उपर्युक्त पलयनवादी – पलायनवादी
भगनावशेष – भग्नावशेष सर्वोतकृढठ – सर्वोत्कृष्ठ
यामीनी – यामिनी समलोचक – समालोचक
समीक्षात्मक – समीक्षात्मक

प्रश्न 5 : निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए :

उत्तर : (क) अलौकिकता – अ + लौक + इक + ता
(ख) अनुदारता – अनु + उदार + ता
(ग) सुंदरता – सुंदर + ता
(घ) विसंगति – वि + संगत + इ
(ड) अनिश्चिता – अ + निश्चित + ता

प्रश्न 6 : वचन बदलिए :

उत्तर : कविता – कविताएँ पंक्ति – पंक्तियाँ कृति – कृतियाँ
शैली – शैलियाँ भाषा – भाषाएँ स्त्री – स्त्रियाँ

रचनात्मक उड़ान

स्वयं कीजिए।

परख के मंच पर

प्रश्न 1 : बच्चन जी की कौन-सी काव्य-कृतियाँ उनके दु:खों और तकलीफों से भरे जीवन काल की देन है तथा उनकी काव्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर : बच्चन जी की ऐसी काव्य-कृतियाँ जो उनके दु:खों और तकलीफों से भरे जीवन काल की देन हैं तथा उनके जीवन की कठोर परिस्थितियों की झलक प्रदान करती हैं, उनमें मुख्यत: 'मधुशाला', सतरंगिनी, मिलन यामिनी, निशा निमंत्रण आदि सम्मिलित हैं।

(1) व्यक्तिगत वेदना का सहज तथा सफल साधारणीकरण करती हैं।
(2) उनकी आत्मकेंद्रिता को प्रकट करती हैं।
(3) वेदनाग्रस्त मन की वेदनाओं की काव्यात्मक प्रस्तुति।

प्रश्न 2 : आपको किस तरह की कविताएँ पढ़ना अच्छा लगता है? आपके प्रिय कवि कौन हैं? संक्षेप में बताइए।

उत्तर : स्वयं कीजिए।

अपना विकास अपने हाथ

1. **डा. हरिवंश राय बच्चन के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए तथा उसको लेख अथवा निबंध के रूप में अपनी अभ्यास की कापी में लिखिए।**
   स्वयं कीजिए।

अध्याय - 4

जबानी बताओ

प्रश्न 1 : मातृ-दिवस अथवा मदर्स-डे को मनाने की प्रथा कहाँ से शुरू हुई?

उत्तर : मातृ-दिवस अथवा मदर्स-डे मनाने की प्रथा सत्रहवीं शताब्दी में यूनाइटेड किंग्डम से शुरू हुई थी।

प्रश्न 2. 'मदरिंग संडे' मनाने की परंपरा किस देश में थी?

उत्तर : मदरिंग संडे मनाने की परंपरा ब्रिटेन में विद्यमान थी।

प्रश्न 3. देवों की माँ रीहा के नाम पर उत्सव किस देश में मनाया जाता था?

उत्तर : देवों की माँ रीहा के नाम पर उत्सव मनाने की प्रथा यूनान में थी।

प्रश्न 4. ऐना जार्विस कौन थीं?

उत्तर : ऐना जार्विस वह महिला थी जिन्होंने मदर्स-डे के प्रचार-प्रसार की दिशा में विशेष भूमिका निभाई।

प्रश्न 5. मदर्स-डे को सरकारी तौर पर मान्यता कब मिली?

उत्तर : मदर्स-डे को सरकारी तौर पर मनाने की मान्यता 8 मई, 1914 को मिली।

प्रश्न 6. मदर्स-डे के अधिकारिक प्रतीक के रूप में कौन-से फूल चुने गए?

उत्तर : मदर्स-डे के अधिकारिक प्रतीक के रूप में सफेद कार्नेशन के फूल चुने गए।

प्रश्न 7. 1857 में बनी कौन-सी हिंदी फिल्म माँ के ममत्व एवं संघर्ष की गाथा को प्रकट करती है?

उत्तर : मदर इंडिया।

प्रश्न 8. बच्चे का प्रथम गुरु कौन होता है?

उत्तर : बच्चे का प्रथम गुरु उसकी माँ होती है।

प्रश्न 9. बच्चा अपने अंदर किसका प्रतिबिंब देखता है?

उत्तर : बच्चा अपने अंदर अपनी माता का ही प्रतिबिंब देखता है।

प्रश्न 10. व्यापारिक विज्ञापनों के लिए मदर्स-डे का प्रयोग कब प्रारंभ हुआ?

उत्तर : व्यापारिक विज्ञापनों के लिए मदर्स-डे का प्रयोग सन् 1923 में प्रारंभ हुआ था।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. मिडलेट संडे से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : मदर्स-डे को प्रारंभ में ईस्टर के चालीस दिन पहले यानी लेंट के चौथे रविवार को मनाया जाता था। इसे मदरिंग संडे अथवा मिडलेट संडे कहते थे।

प्रश्न 2. कौन-सी शताब्दी में ब्रिटेन में मदरिंग संडे मनाने का उल्लेख मिलता है?

उत्तर : ब्रिटेन में 16वीं शताब्दी में मदरिंग संडे मानने का उल्लेख मिलता है।

प्रश्न 3. 'मदरिंग संडे' पर शहर से आने वाले कामगार अपनी माँ के लिए कौन-कौन-सी वस्तुएँ लेकर आते थे?

उत्तर : मदरिंग-संडे पर शहर से आने वाले कामगार अपनी माँ के लिए केक तथा उपहार लेकर घर लौटते थे।

प्रश्न 4. प्राचीन यूनान में वसंत ऋतु में कौन-सा उत्सव मनाया जाता था?

उत्तर : प्राचीन यूनान में वसंत ऋतु में देवों की माता 'रीहा' के नाम से उत्सव मनाया जाता था।

प्रश्न 5. ऐना जार्विस ने प्रथम मदर्स-डे कब मनाया?

उत्तर : ऐना जार्विस ने प्रथम मदर्स-डे 10 मई, 1908 को मनाया था।

प्रश्न 6. 8 मई, 1914 को कौन-सा रविवार मातृ-दिवस के रूप में घोषित किया गया?

उत्तर : 8 मई, 1914 को मई के दूसरे रविवार को मातृ-दिवस के रूप में घोषित किया गया था।

प्रश्न 7. मदर्स-डे अथवा मातृ-दिवस को विश्व भर में लोकप्रियता कब मिली?

उत्तर : मदर्स-डे अथवा मातृ-दिवस को विश्व भर में लोकप्रियता सन् 1923 के आसपास मिली, जब इसका प्रयोग व्यापारिक विज्ञापनों के रूप में किया जाने लगा।

प्रश्न 8. माँ तथा बच्चे का संबंध श्रेष्ठतम अथवा शाश्वत संबंध होता है। क्यों?

उत्तर : माँ का अपने बच्चे से संबंध एक ऐसा संबंध होता है जिसके प्रति मनुष्य ही नहीं, बल्कि जीव-जंतु भी पूर्ण रूप से संवेदनशील होते हैं। अतः यह संबंध एक शाश्वत संबंध है।

प्रश्न 9. माँ तथा उसके बच्चे के संबंध की शुरुआत कहाँ से होती है?

उत्तर : माँ तथा उसके बच्चे के संबंध की शुरुआत माँ के गर्भ से ही हो जाती है।

प्रश्न 10. बच्चे को उँगली पकड़ कर विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाने का काम कौन करता है?

उत्तर : बच्चे की उँगली पकड़कर विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाने का काम उसकी माँ करती है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. मदर्स-डे या मातृ-दिवस की शुरुआत पर संक्षेप में चर्चा करें।

उत्तर : मदर्स-डे या मातृ-दिवस को मनाने की शुरुआत सत्रहवीं शताब्दी में यूनाइटेड किंग्डम में हुई थी। यह ईसाइयों की एक ऐसी परंपरा थी जिसके अनुसार उन्हें सालभर में एक दिन अपनी माँ के लिए चर्च में अवश्य जाना चाहिए। 16 वीं शताब्दी में ब्रिटेन में भी एक ऐसी ही परंपरा थी जिसके तहत मदरिंग संडे नामक उत्सव मनाया जाता था। इसी प्रकार यूनान में भी वसंत ऋतु में एक ऐसा ही उत्सव मनाया जाता था। समय के साथ-साथ ऐसे उत्सवों और परंपराओं को बढ़ावा मिलता रहा तथा फिर ऐना जार्विस नामक महिला के प्रयासों से 8 मई 1914 को मई का दूसरा रविवार मातृ-दिवस के रूप में घोषित कर दिया गया और यह परंपरा विश्व स्तर पर प्रचलित हो गई।

प्रश्न 2. रीहा कौन थी? उसके नाम पर मनाए जाने वाले उत्सव का क्या तरीका था?

उत्तर : 'रीहा' प्राचीन यूनान में देवों की माँ के रूप में जानी जाती थी। अतः यह प्राचीन यूनानियों की एक देवी थी। रीहा के नाम पर मनाए जाने वाले उत्सव का तरीका था – लोग सुबह-सुबह देवी रीहा को शहद से बने केक का भोग लगाते थे। उसे उत्तम पेय चढ़ाते थे तथा उसका फूलों से अभिनंदन करते थे।

प्रश्न 3. ऐना जार्विस नामक महिला ने मातृ-दिवस को किस तरह मनाया?

उत्तर : ऐना जार्विस ने मातृ-दिवस को मनाने के लिए अपनी माँ के सम्मान में चर्च में जाकर सामूहिक प्रार्थना की और अपनी माँ को उपहार भेंट किए।

प्रश्न 4. मातृ-दिवस के व्यापारिक प्रयोग के बारे में विस्तार से बताइए।

उत्तर : 8 मई, 1914 को राष्ट्रपति वुडरो विल्सन द्वारा मई मास के दूसरे रविवार को मातृ-दिवस के रूप में घोषित कर दिया गया। मदर्स-डे के अधिकारिक प्रतीक के रूप में सफेद कार्नेशन के फूलों के मान्यता दी गई। धीरे-धीरे इसे विश्व के विभिन्न भागों में लोकप्रियता मिलने लगी। लंदन जैसे महानगर में इस त्योहार को

अच्छी लोकप्रियता मिली। सन् 1923 तक आते-आते इसकी लोकप्रियता इतनी अधिक बढ़ गई कि इसका प्रयोग व्यापारिक विज्ञापनों के रूप में किया जाने लगा। शुभकामना और धन्यवाद के अभिनंदन पत्र आदि छापे और बाँटे जाने लगे। मिठाइयों, वस्त्रों, आभूषणों आदि का प्रचलन शुरू हो गया। होटलों में बड़ी-बड़ी भव्य पार्टियाँ आयोजित की जाने लगीं। अत: इस तरह मातृ-दिवस का खुलकर व्यापारिक प्रयोग होने लगा।

प्रश्न 5. माँ तथा बच्चे के संबंध अथवा रिश्ते को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : माँ बच्चे का संबंध एक ऐसा शाश्वत संबंध होता है जो बच्चे के दुनिया में आने से पहले ही शुरू हो जाता है। माँ ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है वह अपने बच्चे की उँगली पकड़कर उसे जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ाती है वही बच्चे के स्वरूप को निखारती है। उसे भले-बुरे का ज्ञान प्रदान करती है बच्चे के विकास में माँ की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। अत: माँ का अपने बच्चे के साथ गहरी ममता, स्नेह और अपनेपन का रिश्ता होता है।

प्रश्न 6. आज के परिवेश में मातृ-दिवस का क्या महत्त्व है? प्रमुख कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

उत्तर : आज के आधुनिक जीवन काल में संयुक्त परिवारों का परंपरा लगभग समाप्त हो गई हैं संबंध अथवा रिश्तों के बीच भौतिक पदार्थों को अधिक महत्त्व मिलने लगा है सभी लोग रोजी-रोटी के लिए भागते फिरते हैं। ऐसी परिस्थितियों में माँ तथा उसके बच्चों के बीच दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में यदि मातृ-दिवस के बहाने यदि बच्चे एक दिन माँ के साथ गुजारे, उसे हृदय से सम्मान दें तो निश्चय ही माँ के दिल को शांति मिलेगी और माँ तथा बच्चों के संबंध को सार्थकता मिलेगी। अत: आज मातृ-दिवस का पहले से अधिक महत्त्व है।

भाषा मंच

1. निम्नलिखित के वचन बदलिए :

परंपरा – परंपराएँ माता – माताएँ वस्तु – वस्तुएँ
प्रथा – प्रथाएँ महिला – महिलाएँ शुभकामना – शुभकामनाएँ
प्रतिमा– प्रतिभाएँ उँगली – उँगलियाँ कहानी – कहानियाँ

2. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :

आदमी – आदमियत माता – ममत्व गुरु – गुरुता
शिशु – शैशव अपना – अपनापन स्व – स्वत्व
कठोर – कठोरता कृतज्ञ – कृतज्ञता प्रकट – प्रकटन

3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

प्रतीक्षा – प्र + तीक्षा राजर्षि – राज + ऋषि
उपरांत – उप + रांत शुभकामना – शुभ + कामना
जनार्दन – जन + आर्दन मनोविनोद – मन: + विनोद
नीरस – नि: + रस।

4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए :

दिन – दिवस, वार, दिवा।
माँ – माता, जननी, अम्मा।
महिला – औरत, स्त्री, वनिता।

फूल – पुष्प, सुमन, कुसुम।

5. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति विशेषणों से कीजिए :**

(क) **चरित्रवान** व्यक्ति **अच्छे** कर्म करता है।

(ख) **प्राचीन** परंपराएँ **अधिक** प्रभावी होती हैं।

(ग) **काली** बिल्ली **कम** खाती है।

(घ) **गरीब** माँ भी अपने बच्चे को **उतना** ही स्नेह करती थी।

(ङ) **मीठा** पेय तथा **खट्टी** चटनी लेकर आओ।

परख के पंच पर

निम्न चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए तथा इसमें निहित भावार्थ को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए :

इस चित्र में माँ अपने नन्हे और नटखट बच्चे के करतब देखकर खुशी से उसके पीछे दौड़ जा रही है। अत: यह चित्र माँ तथा उसके बच्चे के शाश्वत संबंध और अटूट स्नेह को प्रकट करता है।

किसी ऐसे अवसर का वर्णन कीजिए, जब आपने अपनी माँ के दिल में अपने प्रति सामान्य से अधिक स्नेह और ममत्व का सागर उमड़ते देखा हो और आप उसे पाकर वसंत के फूलों की तरह खिल उठे हों।

स्वयं कीजिए

अपना विकास अपने हाथ

इस निबंध को बार-बार पढ़िए तथा इसकी भाषा-शैली पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

इस निबंध की भाषा सुरुचिपूर्ण तथा सुबोध है। इसके लेखक ने अपने विचारों और जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए लघु वाक्यों तथा शुद्ध हिंदी और अंग्रेजी भाषा के मिलेजुले शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने तिथि अथवा तारीखों को शब्दों में न लिखकर अंकों में लिखा है जिससे उन्हें याद रख पाना अति सरल हो गया है। लेखक ने इस बात पर भी विशेष ध्यान दिया है कि वाक्यों में प्रयोग किए जाने वाले शब्द अधिक कठोर न हों। अत: उन्होंने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जिसका अर्थ साधारण बुद्धि वाले बालक भी सरलता से समझ पाते हैं। अत: इस निबंध की भाषा-शैली रोचक तथा साधारण है।

मदर टेरेसा के हृदय में गरीबों, कमज़ोरों, एवं बेसहारा लोगों के लिए वही स्नेह बसता था जो आपकी माँ के हृदय में आपके लिए बसता है। मदर टेरेसा के बारे में जानकारी एकत्र कर उनके जीवन एवं कृतित्व पर निंबध लिखिए।

माँ शब्द की गरिमा को चरितार्थ करने वाली करुणा व दया की मूर्ति मदर टेरेसा एक महान नारी थीं। उनका जन्म 27 अगस्त, 1910 ई. को युगोस्लाविया के कोपजे नगर में हुआ था। जन्म के समय उनका नामक एग्नेस रखा गया था। एग्नेस का लालन-पालन अन्य मध्यवर्गीय बच्चों की तरह हुआ।

उन्होंने अठारह वर्ष की आयु मे नन (तपस्विनी) बनने का निर्णय लिया। उन्होंने भारत में विशेषत: बंगाल में काम करने का निश्चय किया। भारत में आने के बाद उन्होंने जन सेवा का व्रत ले लिया। वह गरीब और बीमार लोगों की सेवा में जुट गईं। उन्होंने कई आश्रमों की स्थापना की। निर्मल शिशु सदन उनके द्वारा स्थापित एक प्रमुख संस्था थी। इसमें अनाथ बच्चों का लालन-पालन किया जाता था। उनके सहयोग से अनेक अस्पताल तथा विद्यालय भी

खोले गए। इस तरह उन्होंने अपनी मानव सेवा के बल पर दिखा दिया कि सामान्य व्यक्ति भी मानवता के लिए आशा की किरण बन सकता है।

5 सितंबर, 1997 की रात्रि को हृदय गति के रुक जाने से करुणा की प्रतिमूर्ति मदर टेरेसा का स्वर्गावास हो गया। उनका पार्थिव शरीर 'मदर हाऊस' में दफना दिया गया।

अध्याय - 5

जबानी बताओ

प्रश्न 1. योग किससे जुड़ी हुई सुंदर विद्या है?

उत्तर : योग प्रकृति से जुड़ी हुई सुंदर विद्या है।

प्रश्न 2. आजकल योग का क्या महत्त्व है?

उत्तर : आजकल की भाग-दौड़ की जिंदगी में शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए योग ही सबसे बड़ा सहारा है।

प्रश्न 3. स्वामी रामदेव कौन हैं?

उत्तर : स्वामी रामदेव भारत के सर्वश्रेष्ठ योग गुरु हैं।

प्रश्न 4. स्वामी रामदेव कौन-से घातक रोगों को योग के माध्यम से ठीक करने की बात कहते हैं?

उत्तर : स्वामी रामदेव कैंसर तथा एड्स जैसे घातक रोगों को योग के माध्यम से ठीक करने की बात कहते हैं।

प्रश्न 5. स्वामी रामदेव योग के प्रचार-प्रसार को क्यों महत्त्व देते हैं?

उत्तर : स्वामी रामदेव लोगों को स्वस्थ तथा नीरोग जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से योग के प्रचार-प्रसार को महत्त्व देते हैं।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. योग जीवन की एक कला है। कैसे?

उत्तर : योग जीवन की एक कला है - क्योंकि योग प्राकृतिक रूप से मानव को स्वस्थ एवं नीरोग बनाता है।

प्रश्न 2. योग से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : योग से तात्पर्य योगासनों से है जो विविध प्रकार के शारीरिक अभ्यासों के माध्यम से संपन्न किए जाते हैं।

प्रश्न 3. आज के प्रतिस्पर्धापूर्ण युग में योग का क्या महत्त्व है?

उत्तर : आज के प्रतिस्पर्धापूर्ण युग में योग का बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि आज मनुष्य के पास गंभीर रूप से व्यायाम करने का समय नहीं है। ऐसी स्थिति में योग ही एक ऐसा साधन है जो व्यस्त जीवन में से मात्र कुछ मिनटों का समय निकाल कर संपन्न किया जा सकता है और जीवन को स्वस्थ बनाए रखा जा सकता है।

प्रश्न 4. स्वामी रामदेव ने किस रोग के इलाज का मूलमंत्र योग को बताया है?

उत्तर : स्वामी रामदेव ने स्ट्रैस रोग के इलाज के लिए योग को मूलमंत्र बताया है।

प्रश्न 5. स्वामी रामदेव जी ने किस अभियान को बल दिया है?

उत्तर : स्वामी रामदेव जी ने समाज में व्याप्त विविध प्रकार के अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए चलाए गए अभियान को विशेष बल दिया है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. हमारे स्वस्थ जीवन में योग का क्या महत्त्व है?

उत्तर : हमारे स्वस्थ जीवन में योग का निम्नलिखित महत्त्व है :

(1) योग हमें प्रकृति से जोड़े रखता है।

(2) योग हमें शारीरिक रूप से स्वस्थ तथा नीरोग बनाए रखता है।

(3) योग से मन-मस्तिष्क शांत एवं स्वस्थ बने रहते हैं तथा आदमी का मन कार्य करने में लगता है। अत: योग

जीवन को सफल तथा संपन्न बनाता है।

प्रश्न 2. स्वामी रामदेव योग के प्रचार-प्रसार पर बल क्यों देते हैं?

उत्तर : स्वामी रामदेव निम्न कारणों से योग के प्रचार-प्रसार पर बल देते हैं :

(1) योग ही एकमात्र वह साधन है जो आज के व्यस्त जीवन में मनुष्य को स्वस्थ तथा नीरोग बनाए रखता है।

(2) योग देश के नागरिकों को मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाता है जिससे राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

(3) योग मनुष्य को प्रकृति के निकट बनाए रखता है तथा मनुष्य को पर्यावरण संरक्षण की ओर सचेत करता है।

प्रश्न 3. योग समाज व राष्ट्र के लिए किस तरह लाभदायक सिद्ध हो सकता है?

उत्तर : योग समाज व राष्ट्र के लिए निम्न प्रकार से लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

(1) योग से मनुष्य स्वस्थ तथा नीरोग बन सकते हैं तथा समाज व राष्ट्र की प्रगति में विशेष भूमिका निभा सकते हैं।

(2) योग मनुष्य को स्वस्थ मस्तिष्क तथा सोच प्रदान करता है। अत: समाज से अंधविश्वास समाप्त करने में सहायक हो सकता है।

(3) योग मनुष्य को प्रकृति के सरंक्षण की शिक्षा प्रदान करता है।

प्रश्न 4. भारत के राष्ट्रपति ने स्वामी रामदेव जी से किन घातक रोगों का बिना दवा के योग द्वारा निदान करने का आग्रह किया?

उत्तर : भारत के राष्ट्रपति ने स्वामी रामदेवजी से हार्ट के ब्लॉकेज, डायबिटीज, मोटापा, अर्थराइटिस जैसे रोगों का बिना दवा के योग द्वारा इलाज करने का आग्रह किया।

प्रश्न 5. स्वामी रामदेव जी किन बातों को अंधविश्वास बताते हैं तथा क्यों?

उत्तर : स्वामी रामदेव विभिन्न प्रथाओं को अंधविश्वास मानते हैं, जैसे भूत-प्रेत में विश्वास, दिशाओं तथा ग्रहों आदि का चक्कर तथा कुछ ऐसे अंधविश्वास जो धर्म के नाम पर समाज में फैले हुए हैं।

स्वामी रामदेव का मानना है कि जब तक समाज में इन अंधविश्वासों का प्रचलन बना रहेगा, तब तक स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

प्रश्न 6. स्वामी रामदेव जी विदेशों में बसे भारतीयों को क्या संदेश देते हैं?

उत्तर : स्वामी रामदेव जी विदेशों में बसे भारतीयों को संदेश देते हैं कि उन्हें देश से बाहर रहकर भी देश की संस्कृति तथा उसके महत्त्व को भूलना नहीं चाहिए। भारत की उदार परंपराओं तथा रीति-रिवाजों का दिल से पालन करना चाहिए।

भाषा - ज्ञान

प्रश्न 1 : निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

उत्तर : पौधा – पौधे पेंसिल – पेंसिलें स्त्री – स्त्रियाँ
पुस्तक – पुस्तकें मुद्रा – मुद्राएँ रचना – रचनाएँ

प्रश्न 2 : अब दो मुहावरे लिखकर उनके अर्थ भी लिखिए :

(क) ईद का चाँद होना – बहुत दिनों बाद मिलना।

(ख) नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना।

प्रश्न 3 : कुछ शब्द-युग्म विपरीत अर्थ होते हुए भी साथ-साथ प्रयोग किए जाते हैं, जैसे– उधेड़-बुन,

बुरा-भला आदि।

इसी प्रकार के आठ शब्द-युग्म अब तक के पाठों से छाँटकर नीचे दिए स्थानों पर लिखिए :

दिन – रात	उल्टा – सीधा	इधर – उधर	अपना – पराया
ऊपर – नीचे	आकाश – पाताल	जल – थल	सुखा – गीला

रचनात्मक उड़ान

(क) यदि आप स्वामी जी का साक्षात्कार लेते तो आप उनसे क्या-क्या प्रश्न पूछते? नीचे लिखिए :

1. स्वामी जी योग का प्रचलन कब तथा किसके द्वारा हुआ?
2. स्वामी जी आप समस्त भारत को योगी के रूप में क्यों देखना चाहते हैं?
3. स्वामी जी भ्रष्ट राजनीति से देश को बचाने के लिए आप कौन-सा अभियान चलाना चाहेंगे?

परख के मंच पर

प्रश्न 1. स्वामी रामदेव स्वस्थ भारत का सपना सँजोए अपने योग अभियान में जुटे हैं। क्या आप उनके कार्यों के आधार पर बता सकते हैं कि उनके मन में भावी भारत के विषय में क्या विचार होंगे?

उत्तर : स्वामी रामदेव के योग अभियान के आधार पर हम उनके भावी भारत के विचारों के बारे में कह सकते हैं कि –

(1) वे भारत के मानव संसाधन अथवा नागरिकों को शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ तथा कर्मठ देखना चाहते हैं।

(2) वे समाज व राष्ट्र को अंधविश्वासों तथा भ्रष्टाचार से मुक्त उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ते देखना चाहते हैं।

(3) वे संसार के सामने भारत को एक सर्वश्रेष्ठ देश के रूप में प्रस्तुत करने की इच्छा रखते हैं।

(4) वे भारतीयों को प्राचीन काल की भाँति प्रकृति से जुड़कर सादगी से जीवन जीते देखना चाहते हैं।

प्रश्न 2. योग का जीवन में क्या महत्त्व है। इस साक्षात्कार (बातचीत) के आधार पर बताइए।

उत्तर : इस साक्षात्कार के आधार पर योग के निम्नलिखित महत्त्व सामने आते हैं :

(1) योग के नियमित पालन से मनुष्य जीवन भर स्वस्थ तथा नीरोग बना रह सकता है तथा दीर्घायु बन सकता है।

(2) योग विभिन्न प्रकार के घातक रोगों, जैसे दिल से संबंधित रोगों, मधुमेह, कैंसर, एड्स आदि से बिना दवा के छुटकारा दिला सकता है। इससे इन रोगों के इलाज में खर्च होने वाली बड़ी धनराशि की बचत हो सकती है।

(3) योग मनुष्य को प्रकृति से जोड़कर रखता है फलत: मनुष्य प्राकृतिक शोषण के बजाए उसके संरक्षण की ओर कदम बढ़ाएगा।

(4) योग मनुष्य को स्वस्थ सोच प्रदान करता है। अत: योगी मनुष्य की भ्रष्ट समाज व राष्ट्र के सही मार्ग पर आगे बढ़ाने का महान कार्य कर सकते हैं।

(5) योग परोक्ष रूप से अंधविश्वासों के उन्मूलन में सहयोग देता है।

अध्याय - 6

ज़बानी बताओ

प्रश्न 1. लेखिका का गंगा बाबू से परिचय कितना पुराना था?

उत्तर : लेखिका का गंगा बाबू से परिचय दस वर्ष पुराना था।

प्रश्न 2. लेखिका को संस्मरण का ककहरा किसने सिखाया था?

उत्तर : लेखिका को संस्मरण का ककहरा गंगा बाबू ने सिखाया था।

प्रश्न 3. लेखिका ने गंगा बाबू को क्या करने की सलाह दी थी?

उत्तर : लेखिका ने गंगा बाबू को संस्मरण लिखने की सलाह दी थी।

प्रश्न 4. आठ वर्ष पूर्व गंगा बाबू ने लेखिका को कहाँ बुलाया?

उत्तर : गंगा बाबू ने लेखिका को आठ वर्ष पूर्व लक्खी सराय स्थित बालिका विद्यापीठ में बुलाया था।

प्रश्न 5. बालिका विद्यापीठ से कन्याओं को किस प्रकार विदा किया जाता था?

उत्तर : बालिका विद्यापीठ से कन्याओं को ठीक उसी प्रकार विदा किया जाता था जैसे पुत्री को उसके मायके से विदा किया जाता है।

प्रश्न 6. बालिका विद्यापीठ किसकी प्रिय शिक्षण संस्था थी?

उत्तर : बालिका विद्यापीठ राजेंद्र प्रसाद की प्रिय शिक्षण संस्था थी।

प्रश्न 7. बालिका विद्यापीठ के अहाते में किसके द्वारा लगाया वृक्ष लहरा रहा था?

उत्तर : बालिका विद्यापीठ के अहाते में सुप्रसिद्ध हिंदी लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लगाया गया वृक्ष लहरा रहा था।

प्रश्न 8. लेखिका ने किऊल से आगे की यात्रा कैसे तय की?

उत्तर : लेखिका ने किऊल से आगे की यात्रा कार द्वारा तय की।

प्रश्न 9. भारतीय बेटा किस कार्य को करने में कार्पण्य नहीं दर्शाता है?

उत्तर : भारतीय बेटा अपने बाप के श्राद्ध-तर्पण करने में कभी कार्पण्य नहीं दर्शाता है।

कलम उठायो

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. लेखिका ने गंगा बाबू की किस वस्तु को दुर्लभ निधि की संज्ञा दी?

उत्तर : लेखिका ने गंगा बाबू की संस्मरण सुनाने की निपुणता को उनकी दुर्लभ निधि की संज्ञा दी है।

प्रश्न 2. गंगा बाबू ने लेखिका को कहाँ आने के लिए आमंत्रित किया?

उत्तर : गंगा बाबू ने लेखिका को लक्खी सराय स्थित बालिका विद्यापीठ में आने के लिए आमंत्रित किया।

प्रश्न 3. लेखिका से किसके द्वारा लगाए गए वृक्ष की बगल में एक नया वृक्ष लगाने के लिए विनती की गई?

उत्तर : लेखिका से महादेवी वर्मा द्वारा लगाए गए वृक्ष की बगल में एक नया वृक्ष लगाने की विनती की गई।

प्रश्न 4. लेखिका ने किऊल के रेलवे स्टेशन पर कैसा दृश्य देखा?

उत्तर : लेखिका ने किऊल के रेलवे स्टेशन को जनहीन तथा विरान पाया। उस रेलवे स्टेशन की विरानी एवं जनहीनता को देखकर लेखिका डर से सहम गई थी।

प्रश्न 5. लेखिका किसके आग्रह पर पटना गई?

उत्तर : लेखिका गंगा बाबू के आग्रह पर पटना गई।

प्रश्न 6. लेखिका ने हिंदी का सफल सेनानी किसे कहा?

उत्तर : लेखिका ने गंगा बाबू को हिंदी का सफल सेनानी कहा था।

प्रश्न 7. गंगा बाबू अस्पताल से भाग कर कहाँ गए?

उत्तर : गंगा बाबू अस्पताल से भागकर पटना गए थे।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. गंगा बाबू ने एक श्रेष्ठ संस्मरण की क्या विशेषताएँ बताईं?

उत्तर : गंगा बाबू ने एक श्रेष्ठ संस्मरण की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं :

(1) संस्मरण इस तरह लिखा जाए कि उसमें व्यक्ति की साक्षात् छवि उभर कर सामने आए।

(2) संस्मरण जिस व्यक्ति के विषय में लिखा जाए उसका क्रोध, उसकी परिहास रसिकता, उसकी दयालुता, उसकी गरिमा, उसकी दुर्बलता आदि सबकुछ संस्मरण में स्पष्ट रूप से दिखाई दें।

(3) संस्मरण की भाषा रोचक और सरल हो।

प्रश्न 2. लक्खी सराय स्थित बालिका विद्यापीठ की विलक्षणता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : लक्खी सराय स्थित बालिका विद्यापीठ की विलक्षणता इस प्रकार थी:

(1) विद्यालय आवासीय बस्तियों से दूर शांत प्राकृतिक वातावरण में स्थित था।

(2) विद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी करके जाने वाली बालिकाओं को ठीक उसी प्रकार विदा किया जाता था जैसे की पुत्री को उसके मायके से विदा किया जाता है।

(3) विद्यालय में गुरुकुल के समान व्यवस्था स्थापित की गई थी।

(4) विद्यालय की देखरेख का कार्य गंगा बाबू जैसे हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार द्वारा किया जाता था।

प्रश्न 3. लेखिका ने मेहमानखाने में उस रात को कितने कष्ट उठाते हुए काटा?

उत्तर : लेखिका ने उस रात को अनेक तरह के कष्ट उठाते हुए काटा। जैसे कि उस रात बिजली भी चली गई थी। कमरे में एक लालटेन और लेखिका के सिवा और कोई भी नहीं था। रात को सियारों और उल्लुओं की आवाजें आ रही थीं। जिस कारण लेखिका डर से सहम गई थी। उसे तरह-तरह के भय सताने लगे थे और रात भर नींद नहीं आई।

प्रश्न 4. गंगा बाबू का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : गंगा बाबू का नाम राष्ट्रभाषा हिंदी के उन सेवकों में शामिल है जिन्होंने बिना किसी प्रकार के पुरस्कार की इच्छा मन में रखे सच्चे मन से उसकी सेवा की है। गंगा बाबू संस्मरण सुनाने और चुटकुले करने में अत्यंत निपुण थे। उनकी भाषा इतनी अधिक सरल तथा रोचक होती थी कि सुनने वाले उन पर स्वत: ही मोहित हो जाते थे। लेखिका शिवानी के लिए तो गंगा बाबू सबसे बड़े प्रेरणा स्रोत थे। उनकी दृष्टि में गंगा बाबू हिंदी के सफल सेनानी थे जिनका साहित्य कई विधाओं पर पूर्ण अधिकार था। उनके असल व्यवहार तथा चरित्र का परिचय बालिका विद्यापीठ के वातावरण में स्वत: ही मिल जाता है। बालिका विद्यापीठ में अपनाए जाने वाले शुद्ध भारतीय संस्कार गंगा बाबू की ही देन थे। अत: गंगा बाबू हिंदी के सच्चे सेवक तथा उदार हृदयी व्यक्ति थे।

प्रश्न 5. लेखिका ने इस संस्मरण के माध्यम से हिंदी साहित्यकारों के किस कृत्य पर खेद प्रकट किया? सविस्तार बताइए।

उत्तर : लेखिका ने इस संस्मरण के माध्यम से हिंदी साहित्यकारों के विभिन्न प्रकार के कृत्यों पर खेद प्रकट किया है, जैसे कि वे अपनी मातृभाषा की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने के बजाय विभिन्न सभाओं में केवल उसकी जय-जयकार करने में ही समय बिताते हैं। हिंदी के बड़े लेखकों और उसके सेवक की मृत्यु पर केवल शोकसभाएँ ही मनाते हैं। उनसे प्रेरणा प्राप्त करके हिंदी की प्रगति के लिए कोई ठोस कार्य नहीं करते। उसके सच्चे सेवकों को जो सम्मान और स्थान दिया जाना चाहिए वह कभी नहीं दिया जाता। मात्र औपचारिकतओं का ही निर्वाह किया जाता है।

भाषा मंच

1. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :**

सराहना – बुराई   जीवित – मृत   कठिन – सरल
सफल – असफल   माहिर – निकम्मा   मिठास – कड़वाहट
टेढ़ा – सीधा   कृपण – उदार

2. **दिए गए संयुक्ताक्षरों से बने दो-दो शब्द लिखिए :**

स् + म = स्म	स्मरण	स्मारक	स्मरना
त् + थ = त्थ	उत्थान	उत्थापक	उत्थिक
स् + य = स्य	स्याह	स्थान	शस्य
व् + य = व्य	कर्तव्य	व्यवस्था	व्यवहार

3. **दिए गए शब्दों से विशेषण बनाए :**

रूप – रूपवान   हास्य – हास्यास्पद   रस – रसीला
स्मृति – स्मार्त   दु:ख – दु:खी   देह – दैहिक
हृदय – हार्दिक

4. **निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा प्रत्यय अलग करके लिखिए ।**

अलौलिकता – अ + लैलिक + ता
अनुदारता – अनु + दार + ता
विसंगति – वि + संगत + ई
अपमानित – अप + मान + इत

5. **यहाँ ही, भी, तो तथा भर निपात दिए हुए हैं, इसने दो-दो वाक्य बनाइए:**

ही – मोहन ही जा रहा है।
भी – मोना भी जा रही है।
तो – मुझे जाने तो दो।
भर –मैं उसे जानता भर हूँ।

परख के मंच पर

1. **संस्मरण की तरह डायरी लेखन भी एक विशेष साहित्यिक विधा है। क्या आप इस विधा पर संक्षिप्त प्रकाश डाल सकते हैं?**

उत्तर : डायरी लेखन साहित्य की एक अनोखी विधा है। डायरी लेखन से तात्पर्य अपने प्रतिदिन के अनुभवों को रात्रि को सोने से पहले डायरी में लिखने की आदत से है। डायरी लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना

चाहिए:

(1) डायरी लेखन नियमित रूप से करना चाहिए।

(2) डायरी में अपने अनुभवों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं लिखना चाहिए। बल्कि उन्हें निष्पक्ष भाव से लिखना चाहिए।

(3) अपनी बात को कहने के लिए सरल तथा स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(4) अपनी डायरी को अपने तक ही सीमित रखने का प्रयास करना चाहिए।

(5)डायरी में अपने गंभीर नकारात्मक भावों को उजागर न ही करें तो बेहतर होगा।

2. शिवानी की भाषा शैली को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर – शिवानी हिंदी की सुविख्यात लेखिकाओं में से एक थीं। उन्होंने साहित्यिक रचनाओं को लिखने के लिए अपनी ही एक विशेष शैली एवं भाषा को अपनाया है। उनकी भाषा – शैली की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

(1) उन्होंने सरल, रोचक तथा स्पष्ट भाषा के जरिए अपने मन के भावों को प्रकट करने का प्रयत्न किया है।

(2) उन्होंने अत्यधिक कठोर तथा उबाऊ शब्दों के प्रयोग से बचकर अपनी रचनाओं पठनीय बनाने का प्रयत्न किया है।

(3) उन्होंने सरल तथा लोकप्रिय बिंबों के माध्यम से अपनी रचनाओं में रोचकता पैदा की है।

3. आप हिंदी अर्थात् अपनी राष्ट्रीय भाषा के उत्थान में क्या योगदान दे सकते हैं? अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए तथा बताइए।

उत्तर : स्वयं कीजिए।

अध्याय - 7

जबानी बताओ

प्रश्न 1. मीरा ने किसको मोल लिया?

उत्तर : मीरा ने भगवान श्रीकृष्ण को मोल लिया है।

प्रश्न 2. मीरा को प्रभु ने दर्शन क्यों दिए?

उत्तर : प्रभु ने अपने पूर्व जन्म के वादे के कारण मीरा को दर्शन दिए।

प्रश्न 3. सतगुरु ने मीरा को कौन-सी अनमोल वस्तु दी?

उत्तर : सतगुरु ने मीरा को भक्ति जैसी अनमोल वस्तु दी।

प्रश्न 4. सत की अथवा सच्चाई की नाव को कौन खेता है?

उत्तर : सत अथवा सच्चाई की नाव सतगुरु खेता है।

प्रश्न 5. सावन के आगमन पर मीरा को किसके आने की भनक मिलती है?

उत्तर : सावन के आगमन पर मीरा को हरि के आने की भनक मिलती है।

प्रश्न 6. सावन में कैसी पवनें चलती हैं?

उत्तर : सावन में शीतल तथा सुहावनी पवनें चलती हैं।

प्रश्न 7. मीरा सावन की ऋतु को क्या बताती है?

उत्तर : मीरा सावन की ऋतु को आनंद और मंगल के गीत गाने की ऋतु बताती हैं।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. मीरा ने अमोलक शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

उत्तर : मीरा ने राम रूपी धन को अमोलक वस्तु कहा है।

प्रश्न 2. लोग मीरा की किस बात के बारे में जानते हैं?

उत्तर : लोग मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति के बारे में जानते हैं।

प्रश्न 3. मीरा के लिए सबसे मूल्यवान धन कौन-सा है?

उत्तर : मीरा के लिए सबसे मूल्यावान राम रतन रूपी धन है।

प्रश्न 4. भव-सागर को पार करने में कौन सहायता करता है?

उत्तर : भव-सागर पार करने में सतगुरु सहायता करता है।

प्रश्न 5. सावन की घटाएँ मीरा को क्या संदेश देती हैं?

उत्तर : सावन की घटाएँ मीरा को हरि या इष्ट देव के आने का संकेत देती हैं।

प्रश्न 6. झड़ लगने का संकेत कौन देता है?

उत्तर : झड़ लगने का संकेत बादल और शीतल हवाएँ देती हैं।

प्रश्न 7. मीरा को आनंद-मंगल गीत गाने के लिए कौन प्रेरित करता है?

उत्तर : मीरा को आनंद-मंगल के गीत गाने के लिए सावन की सुहावनी ऋतु प्रेरित करती है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. मीरा ने सभी लोगों के सामने खुलकर किसको मोल लिया और उसने इस बारे में अपने मन की भावनाओं को कैसे व्यक्त किया?

उत्तर : भक्तिपरक इस कविता के अनुसार मीरा ने गोविंद अर्थात भगवान श्रीकृष्ण को मोल लिया हुआ है। इस बारे में मीराबाई कहती हैं कि उन्होंने अपने गोविंद को खुलकर मोल लिया है। कहने वाले तो उन्हें गोरा और काला दोनों कहकर संबोधित करते हैं। पर मीरा के लिए तो वे उनके इष्ट देव तथा सबसे मूल्यवान वस्तु हैं। आगे मीराबाई कहती हैं कि प्रभु का उनसे मिलन कोई वर्तमान जन्म की घटना नहीं है। बल्कि पूर्व जन्म का कौल या वादा है।

प्रश्न 2. सतगुरु ने मीरा पर क्या कृपा की और उसने मीरा को प्रभु दर्शन के काबिल कैसे बनाया?

उत्तर : सतगुरु ने मीरा को भक्ति का मार्ग दिखाकर प्रभु को पाने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने मीरा को समझाया है कि राम रतन रूपी धन से कीमती और कोई धन नहीं है। यह एक ऐसा धन है जिसे जितना भी खर्चोगे उतना ही बढ़ेगा। यही वह धन है जिसे पाकर मनुष्य भव-सागर अर्थात् संसार रूपी सागर को सरलता से पार कर लेता है। अत: हम कह सकते हैं कि सतगुरु ने मीराबाई को प्रभु से मिलाने की कृपा की है।

प्रश्न 3. मीरा के लिए सावन उमंग और उल्लास भरा क्यों साबित हुआ? सावन में मीरा के मन की विशेष स्थिति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : मीरा भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्तिन है। सावन की ऋतु उनके लिए विशेष महत्त्व रखती है। सावन के आने पर जब काले-काले बादल उमड़ते हैं तथा शीतल हवाएँ चलती हैं, तब समस्त प्रकृति आनंद में डूब जाती है। मीरा को लगता है कि उनके प्रिय गोविंद अर्थात् श्रीकृष्ण उनसे मिलने के लिए आ रहे हैं। बस इसी खुशी में मीरा आनंद मंगल गीत गाने में मग्न हो जाती है।

प्रश्न 4. मीरा द्वारा रचित इन भक्ति पदों के आधार पर मीरा की प्रभु भक्ति की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : मीरा द्वारा रचित भक्ति पदों के आधार पर मीरा की प्रभु भक्ति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

(1) मीरा भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में कंठ तक डूबी हुई है। उन्हें अपने प्रभु के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता।

(2) मीरा की अपने प्रभु के प्रति इतनी गहरी भक्ति है कि उसे प्राकृतिक ऋतुओं जैसे कि सावन की विभिन्न घटाओं में भी अपने प्रभु के आने का संदेश प्राप्त होता है और वह स्वयं को उनके निकट समझकर मंगल गीत गाने में मग्न हो जाती है।

(3) अत: उक्त पदों से स्पष्ट हो जाता है कि मीरा अपने प्रभु से इतना अधिक प्रेम करती है कि उसे हर वस्तु में वही दिखाई देते हैं।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :

बजता ढोल : बजता ढोल सभी को सुहावना लगता है।
माही कूँ : याही कूँ बुलाना गया था।
दरसण : मीरा प्रभु के दरसण को उतावली रहती है।
अमोलक : मीरा के लिए उसके प्रभु ही सबसे अमोलक वस्तु हैं।
दामिन : वर्षा के समय दामिन तो दमकती ही है।

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :

माता – विमाता   मोल – अनमोल   गोरा – काला
खोलना – बंद करना   जन्म – मृत्यु   दिन – रात
सच्चा – झूठा   मंगल – अमंगल

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए :

माई – माँ, माता, अंबा
गोविंद – श्रीकृष्ण, मोहन, श्याम
दिन – दिवस, वार, दिवा
गुरु – आचार्य, शिक्षक, अध्यापक
दामिनी – बिजली, तड़ित, चपला
मेघ – बादल, वारिद, पयोद
पवन – हवा, वायु, अनिल
धरती – भूमि, भू, धरा

4. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए :

अमोलक – अ + मोलक   मनभावन – मन + भावन
दुरुपयोग – दुर + उपयोग   सतगुरु – सत + गुरु
सदाचार – सद् + आचार   सूर्योदय – सूर्य + उदय
कवींद्र – कवि + इंद्र

5. निम्नलिखित के वचन बदलिए :

लकड़ी – लकड़ियाँ   कहानी – कहानियाँ   नारी – नारियाँ
बिल्ली – बिल्लियाँ   लड़की – लड़कियाँ   टहनी – टहनियाँ
पत्नी – पत्नियाँ   दवाई – दवाइयाँ   गिरी – गिरियाँ

6. नीचे शब्दों के दो-दो रूप दिए गए हैं, उनमें से शुद्ध रूप बताइए :

सतगुरू – सतगुरु   घनिष्ट – घनिष्ठ
उज्ज्जवल – उज्ज्वल   गोविंदो – गोविंदो
बदरिया – बदरिया   संन्यासी – सन्यासी

7. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए :

अग्नि – आग   मुख – मुँह   हस्त – हाथ   जग – संसार
दिवस – दिन   अर्थ – धन   चहुँ –चारों   कर्म – काम
दुग्ध – दूध   आम्र – आम   ग्राम – गाँव   दधि – दही

रचनात्मक उड़ान

निम्नलिखित का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) जनम-जनम की पूँजी पायी – जन्मों से एकत्र की गई पूँजी या धन।
(ख) भनक सुनी हरि आवन की – हरि अथवा भगवान के आने का संदेश मिला।
(ग) दामिन दमकै झर लावन की – झर अथवा वर्षा लाने वाली बिजली चमकने लगी है।
(घ) लियो री अमोलक मोल – अमूल्य अनमोल वस्तु मोल ली।
(ङ) सत की नाव खेवटिया सतगुरु – सत्य अथवा सच्चाई की नाव को खेने

वाले सतगुरु होते हैं।

परख

प्रश्न 1. मीरा के किस पद में आपको उसकी प्रभु भक्ति के स्पष्ट संकेत मिलते हैं? पद के भावार्थ सहित उसकी विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : वैसे तो मीरा द्वारा रचित हर पद से उनकी विशेष प्रभु भक्ति के दर्शन होते हैं, किंतु निम्नलिखित पद से उनकी प्रभु भक्ति का उदात रूप दिखता है।

बरसै बदरिया सावन की, सावन की मनभावन की।
सावन में उमग्यों मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-उमड़ घुमड़ चहुँदिश से आया, दामिन दमकै झर लावन की।
नन्ही-नन्ही बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनंद-मंगल गावन की।।

इस पद का भावार्थ है :

मीराबाई के अनुसार सावन की मन को लुभाने वाली ऋतु आ गई है। सावन की इस ऋतु के आने पर उनका मन उमंग से भर गया है और उन्हें लगने लगा है कि उनके प्रभु उनसे मिलने के लिए आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त चारों तरफ बादल उमड़ते दिखाई देने लगे हैं। बिजली चमक रही है और नन्ही-नन्ही बूँदें बरस रही हैं। शीतल पवनें चल रही हैं।

प्रश्न 2. मीरा की पदावली की भाषा-शैली का अपने शब्दों में विश्लेषण कीजिए।

उत्तर : मीरा की पदावली की भाषा-शैली अत्यंत भक्तिपरक है। इन पदों को लिखने में उन्होंने ब्रज हिंदी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से भाषा में विशेष अनूठापन आ गया है। उन्होंने विभिन्न प्रकार के बिंबों और उपमाओं का भी प्रयोग किया है। इस तरह से पदों में विशेष रस तथा सौंदर्य उत्पन्न हो गया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने मन के उल्लास तथा भक्ति भावना को प्राकृतिक ऋतुओं के जरिए चित्रित करने का प्रयास किया है जो वास्तव में एक अनूठा प्रयास है। अत: मीरा के पदों की भाषा-शैली अत्यंत रोचक, सरल तथा अनूठी है।

अध्याय - 8

जबानी बताओ

प्रश्न 1. आवेशों की उत्पत्ति के प्रमुख कारण कौन-से हैं?

उत्तर : आवेशों की उत्पत्ति के प्रमुख कारण मनुष्य की परिस्थितियाँ, कर्म, विचार तथा उसकी वाणी होते हैं।

प्रश्न 2. आवेशों पर नियंत्रण रखना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : शांत तथा सुखी जीवन को जीने के लिए आवेशों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है।

प्रश्न 3. क्रोध से उत्पन्न कोई एक कुप्रभाव बताइए।

उत्तर : क्रोध मनुष्य को असमर्थ बना देता है।

प्रश्न 4. आत्मनियंत्रण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : अपनी इंद्रियों अथवा आवेशों पर नियंत्रण रखना ही आत्मनियंत्रण है।

प्रश्न 5. राजकुमारों ने मूर्तिकार की मूर्तियाँ देखकर क्या करने का निर्णय लिया?

उत्तर : राजकुमारों ने मूर्तिकार की मूर्तियाँ देखकर उसे अपने राज्य में ले जाने का निर्णय लिया।

प्रश्न 6. मूर्तिकार ने राजकुमारों के साथ उनके राज्य में चलने के लिए कौन-सी शर्त रखी?

उत्तर : मूर्तिकार के राजकुमारों के साथ उनके राज्य में चलने के लिए शर्त रखी कि वे दोनों उसकी बेटियों के साथ विवाह कर लें।

प्रश्न 7. अपने किस आवेश अथवा अवगुण के फलस्वरूप मूर्तिकार को अपने सुखद भविष्य से हाथ धोना पड़ा?

उत्तर : मूर्तिकार ने अपने क्रोधावेश के फलस्वरूप अपने सुखद भविष्य से हाथ धोना पड़ा।

प्रश्न 8. क्या राजकुमारों ने मूर्तिकार की शर्त मानी?

उत्तर : हाँ, राजकुमारों ने मूर्तिकार की शर्त मानी।

प्रश्न 9. मूर्तिकार को कितने मास के लिए कारावास की सजा मिली?

उत्तर : मूर्तिकार को छह मास के लिए कारावास की सजा मिली।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. आवेशों से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : आवेशों से तात्पर्य हमारे मन-मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली विविध प्रकार की संवेदनाएँ अथवा भाव है।

प्रश्न 2. होरेस फ्लैचर ने क्रोध और चिंता के क्या दुष्परिणाम बताए हैं?

उत्तर : होरेस फ्लैचर के अनुसार क्रोध एवं चिंता मनुष्य को निराश और असमर्थ बना देते हैं।

प्रश्न 3. मनुष्य आत्महत्या अथवा हत्या करने की ओर कब प्रवृत्त होता है?

उत्तर : आवेश के कारण मनुष्य आत्महत्या या हत्या की ओर प्रवृत्त हो सकता है।

प्रश्न 4. क्रोध को शांत रखना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : शांत और स्वस्थ बने रहने के लिए क्रोध को शांत रखना आवश्यक है।

प्रश्न 5. आत्मनियंत्रण की शक्ति का कोई एक लाभ बताइए।

उत्तर : आत्मनियंत्रण की शक्ति से संपन्न मनुष्य क्रोध जैसे आवेश को सरलता से नियंत्रित कर सकता है।

प्रश्न 6. मूर्तिकार कहाँ रहता था?

उत्तर : मूर्तिकार एक नगर में रहता था।

प्रश्न 7. मूर्तिकार को किनकी शादी की चिंता रहती थी?

उत्तर : मूर्तिकार को अपनी जवान बेटियों की शादी की चिंता रहती थी।

प्रश्न 8. राजकुमार किस राज्य से संबंध रखते थे?

उत्तर : राजकुमार मूर्तिकार के पड़ोसी राज्य से संबंध रखते थे।

प्रश्न 9. मूर्तिकार की बेटियों के विवाह में कौन बाधा बना?

उत्तर : मूर्तिकार का स्वयं का क्रोधावेश ही उसकी बेटियों के विवाह में बाधक बना।

प्रश्न 10. मूर्तिकार को अपने क्रोध का क्या फल मिला?

उत्तर : मूर्तिकार को अपने क्रोध के कारण छह मास के कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

प्रश्न 11. शोक और ईर्ष्या से हमारी क्या हानि हो सकती है?

उत्तर : शोक और ईर्ष्या से हमारे शरीर पर अस्वास्थ्यकर प्रभाव पड़ सकता है।

प्रश्न 12. हमारी मांसपेशियों को दुर्बल कौन बनाता है?

उत्तर : निराशा हमारी मांसपेशियों को दुर्बल बनाती है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. क्रोध के आवेश को नियंत्रित रखने के कोई सार्थक उपाय बताइए।

उत्तर : क्रोध के आवेश को नियंत्रित रखने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं:

(1) क्रोध के आवेश को नियंत्रण में रखने के लिए मनुष्य को शांत रहने का प्रयास करना चाहिए। शांति क्रोध को नियंत्रण में रखने में बड़ी मदद करती है।

(2) क्रोधावेश को नियंत्रण में रखने का एक सबसे प्रभावी उपाय यह भी है कि मनुष्य अपने अंदर धैर्य अथवा आत्मनियंत्रण की शक्ति का विकास कर ले।

प्रश्न 2. आत्मनियंत्रण की शक्ति हमें आवेशों पर नियंत्रण करने के काबिल बनाती है। इस उक्ति की पुष्टि अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : आत्मनियंत्रण की शक्ति को अन्य शब्दों में धैर्य या धीरज कह सकते हैं। यही वह शक्ति होती है जो विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के अंदर उत्पन्न होने वाले विभिन्न आवेशों को नियंत्रण में रखने की सामर्थ्य रखती है। इस शक्ति से संपन्न व्यक्ति किसी भी स्थिति में एकाएक क्रोधित अथवा चिंता ग्रस्त नहीं होता है। वह शांत रहता है तथा स्थिति को गंभीरता से समझता है। फिर उस स्थिति से उबरने के लिए धीरज से काम लेता है। उसके मन-मस्तिष्क बड़े-बड़े आघातों को शांति से सहन करने में सफल रहते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि आत्मनियंत्रण की शक्ति ही हमें आवेशों पर नियंत्रण बनाए रखने के काबिल बनाती है।

प्रश्न 3. मूर्तिकार का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : मूर्तिकार अपने काम का धनी व्यक्ति था। वह इतनी अधिक सुंदर मूर्तियाँ बनाता था कि उनकी देश-विदेश में बड़ी माँग रहती थी। उसके पास धन की कमी नहीं थी। किंतु इतना गुणी और कुशल मूर्तिकार होते हुए भी उसमें एक ऐसा अवगुण था जो बड़े-बड़ों को क्षण भर में ही मिट्टी चटा दे। वह अवगुण था क्रोधावेश का। मूर्तिकार जरा-सी बात पर क्रोध में आ जाता था और कुछ भी गलत कर बैठता था। यही उसने राजकुमारों के साथ भी किया जो उसकी बेटियों के साथ विवाह करने को तैयार हो गए थे। अत: उसे अपने इस अवगुण के कारण सुख

के स्थान पर दु:ख ही प्राप्त हुआ।

प्रश्न 4. आवेश हमारे जीवन को किस तरह की हानियाँ पहुँचाते हैं तथा इन पर नियंत्रण करना कैसे संभव हो सकता है?

उत्तर : क्रोध, चिंता तथा निराशा हमारे शरीर को निम्न प्रकार से कमज़ोर तथा रोगी बनाते हैं **:**

(1) क्रोध, चिंता तथा निराशा हमारे शरीर की ऊर्जा को अनावश्यक रूप से खर्च करते हैं।

(2) ये हमारे शरीर में उपस्थित मांसपेशियों को दुर्बल बनाते हैं।

(3) ये हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक सोच का शिकार बनाते हैं।

प्रश्न 5. क्रोध, चिंता तथा निराशा शरीर को किस तरह कमज़ोर और रोगी बनाते हैं?

उत्तर : क्रोध, चिंता तथा निराशा मानव शरीर को निम्नलिखित प्रकार से कमज़ोर और रोगी बनाते हैं **:**

(1) क्रोध, चिंता और निराशा मानव मस्तिष्क में नकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न करते हैं।

(2) इनके कारण मनुष्य के शरीर की मांसपेशियाँ कमजोर हो जाती हैं जिससे मनुष्य कमज़ोर तथा बीमार हो जाता है।

(3) इनके कारण मानव शरीर में विविध प्रकार के हानिकारक रसायन उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 6. स्वास्थ्य संबंधी इस प्रेरणात्मक लेख को पढ़िए तथा बताइए कि स्वस्थ एवं सुखद जीवन जीने के लिए हमें क्या-क्या उपाय करने चाहिए?

उत्तर : इस प्रेरणात्मक लेख को पढ़कर सुखद जीवन जीने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं **:**

(1) आदमी को नकारात्मक आवेशों, जैसे क्रोध, चिंता, ईर्ष्या भाव आदि को नियंत्रण में रखना चाहिए।

(2) मनुष्य को आत्मनियंत्रण अथवा धीरज की आदत डालने के लिए सकारात्मक सोच का विकास करना चाहिए।

(3) मनुष्य को उचित खान-पान तथा उचित व्यवहार की आदत डालनी चाहिए।

भाषा मंच

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :

क्रोध – शांति कुप्रभाव – सुप्रभाव अवगुण – गुण उत्पत्ति – विनाश
हानि – लाभ शक्तिशाली – कमज़ोर सरल – कठिन खरीदना – बेचना
सुंदर – असुंदर राजी – नाराज योग्य – अयोग्य शोक – खुशी

2. निम्नलिखित वाक्यों में रीतिवाचक विशेषणों को अधोरेखित कीजिए :

(क) घड़ी **धीरे-धीरे** चलती है।

(ख) स्वस्थ व्यक्ति **तेज़** दौड़ता है।

(ग) रमेश **ध्यानपूर्वक** पढ़ता है।

(घ) कमज़ोर व्यक्ति **ज़ोर-ज़ोर** से चिल्लाता है।

(ङ) आप यहाँ **कैसे** आए?

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :

बच्चा – बच्ची राजकुमार – राजकुमारी बेटी – बेटा
आदमी – औरत घोड़ा – घोड़ी रानी – राजा

शेर – शेरनी   लोमड़ – लोमड़ी   हिरण – हिरणी

4. निम्नलिखित प्रत्ययों के प्रयोग से बनने वाले कोई तीन-तीन शब्द लिखिए:

आई	आन	आवट	ई
लिखाई	मिलान	लिखावट	हँसी
पढ़ाई	लगान	बनावट	झिड़की
लड़ाई	उड़ान	थकावट	बोली

5. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए :

मनुष्य – आदमी   मानव   मनुज
क्रोध – गुस्सा   कोप   रोष
राजा – नृप   प्रजापति   नरेश
हर्ष – खुशी   प्रसन्नता   प्रफुल्लता
शरीर – तन   देह   काया

6. प्रस्तुत पाठ को ध्यानपूर्वक पढिए तथा कोई आठ भाववाचक संज्ञाएँ चुनकर लिखिए :

निराशा, सुंदरता, मधुरता, सौभाग्य, घबराहट, जीवन, हँसी, हार

7. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

भावना – भावनाएँ   मूर्ति – मूर्तियाँ   कल्पना – कल्पनाएँ   बेटी – बेटियाँ
कहानी – कहानियाँ   सच्चाई – सच्चाइयाँ   राजकुमारी – राजकुमारियाँ   खुशी – खुशियाँ
प्रतिज्ञा – प्रतिज्ञाएँ   नाड़ी – नाड़ियाँ   मांसपेशी – मांसपेशियाँ   अस्थि – अस्थियाँ

रचनात्मक उड़ान

1. यदि आप मूर्तिकार के स्थान पर होते तो क्या मात्र एक मूर्ति के टूटने पर क्रोधित होते? अगर नहीं, तो बताइए क्यों?

स्वयं कीजिए।

2. इस अध्याय को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा अपने चिंतन एवं मंथन से सुझाइए की हम आवेशों पर नियंत्रण के लिए क्या-क्या उपाय कर सकते हैं?

हम आवेशों पर नियंत्रण करने के लिए निम्न उपाय कर सकते हैं :

(1) नियमित रूप से व्यायाम तथा योगासन करना चाहिए।
(2) प्रतिदिन उचित आहार लेना चाहिए।
(3) अपनी सोच को सकारात्मक रूप से विकसित करना चाहिए।
(4) धैर्य अथवा धीरज को हर प्रकार की परिस्थिति में बनाकर रखना चाहिए।

परख के मंच पर

प्रश्न 1. गंभीर चिंतन कीजिए तथा बताइए कि यदि मूर्तिकार क्रोधावेश जैसे विनाशकारी आवेग का दास न बनता, तो अपने भावी जीवन में कौन-सी खुशियाँ और सफलताएँ प्राप्त कर सकता था?

उत्तर : यदि मूर्तिकार क्रोधावेश जैसे विनाशकारी आवेग का दास न बनता तो भावी जीवन में निम्नलिखित खुशियाँ एव

सफलताएँ प्राप्त कर सकता था :

(1) पड़ोसी राज्य के राजकुमार उसे अपने राज्य का शाही मूर्तिकार बनाते तथा वह और अधिक समृद्ध जीवन जी सकता ।

(2) उसकी दोनों बेटियों का विवाह उन दोनों राजकुमारों से संपन्न हो जाता तथा वे सुखी जीवन जी पाती।

(3) मूर्तिकार को इनाम के स्थान पर कारावास की सजा न भुगतनी पड़ती।

प्रश्न 2. आप विविध प्रकार के भावावेशों के बारे में क्या विचार रखते हैं? संक्षेप में बताइए।

उत्तर : स्वयं कीजिए।

चित्रात्मक बोध

पहला चित्र शांत स्वभाव अथवा ध्यान प्रक्रिया को दर्शाता है। इससे स्पष्ट होता है कि आवेशों पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए ध्यान उत्तम प्रक्रिया है

दूसरा चित्र क्रोधावेश को दर्शाता है क्रोधावेश मनुष्य के शरीर और मस्तिष्क दोनों को खोखला कर देता है।

अध्याय - 9

जबानी बताओ

प्रश्न 1. मनुष्य प्रारंभ से ही क्या स्वप्न देखता था?

उत्तर : मनुष्य प्रारंभ से ही पक्षी की तरह आकाश में उड़ने का स्वप्न देखता था।

प्रश्न 2. हेनरी कैवेंडिश ने किसकी खोज की थी?

उत्तर : हेनरी कैवेंडिश ने ज्वलनशील हवा या हाइड्रोजन गैस की खोज की थी।

प्रश्न 3. फ्रांस के जोज़ेफ तथा जैक्स किससे प्रभावित हुए?

उत्तर : फ्रांस के जोजेफ तथा जैक्स कैवेंडिश द्वारा खोजी गई गैस से प्रभावित हुए।

प्रश्न 4. जोज़ेफ तथा जैक्स ने धुएँ से भरा पहला थैला कब उड़ाया?

उत्तर : 1783 में।

प्रश्न 5. पहला यात्री सहित गुब्बारा कब उड़ाया गया?

उत्तर : पहला यात्री सहित गुब्बारा 19 सितंबर, 1783 में उडाया गया।

प्रश्न 6. गुब्बारे को दैत्य समझ कर मारने का प्रयास किसने किया?

उत्तर : गुब्बारे को दैत्य समझकर मारने का प्रयास किसानों ने किया।

प्रश्न 7. 3 1/2 फुट व्यास वाले गुब्बारे में भरी वायु का भार लगभग कितना हो सकता है?

उत्तर : लगभग 8 पौंड।

प्रश्न 8. प्रथम सफल वायुपोत किसने बनाया था?

उत्तर : प्रथम सफल वायुपोत अल्बइर्टो सैटोस - डुमौट ने बनाया था।

प्रश्न 9. भापगाड़ी का नक्शा किसने बनाया?

उत्तर : भापगाड़ी का नक्शा विलियम हैंसन और जॉन स्ट्रिंगफैलो ने बनाया।

प्रश्न 10. प्रोफ़ेसर लैंगली कौन थे?

उत्तर : प्रोफेसर लैंगली वाशिंगटन डी.सी. में स्मिथसोनियन संस्थान के निदेशक थे।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. गुब्बारों को हवा में उड़ाने की प्रेरणा कब तथा कैसे मिली?

उत्तर : गुब्बारों को हवा में उडाने की प्रेरणा चिमनी से उड़ते हुए धुएँ से ली गई।

प्रश्न 2. लवाजिर ने किस गैस को हाइड्रोजन का नाम दिया?

उत्तर : लवाजिर ने ज्वलनशील हवा को हाइड्रोजन गैस का नाम दिया।

प्रश्न 3. धुएँ को थैलों में भरकर उड़ाने वाले दो भाई कौन थे?

उत्तर : धुएँ को थैलों में भरकर उड़ाने वाले दो भाई फ्रांस के जोजेफ तथा जैक्स मोंट-गोल्फर थे।

प्रश्न 4. जोज़ेफ तथा जैक्स ने फ्रांसीसी अकादमी के सहयोग से कौन-सा कार्य किया?

उत्तर : जोजेफ तथा जैक्स ने फ्रांसीसी अकादमी के सहयोग से 41 फुट व्यास का गुब्बारा उड़ाया था।

प्रश्न 5. पहली बार गुब्बारे में यात्रा करने वाले तीन जंतु कौन-से थे?

उत्तर : पहली बार गुब्बारे में यात्र करने वाले तीन जंतु बतख, मुर्गा तथा भेड़ थे।

प्रश्न 6. हाइड्रोजन से भरे गुब्बारे को क्या कहा जाता था?

उत्तर : हाइड्रोजन से भरे गुब्बारे को चार्लियर कहा जाता था।

प्रश्न 7. पहला वायुपोत किसने तथा कब बनाया?

उत्तर : पहला वायुपोत 1852 में हेनरी जिफोर्ड ने बनाया था।

प्रश्न 8. प्रथम वायुपोत की लंबाई कितनी तथा उसका आकार कैसा था?

उत्तर : प्रथम वायुपोत की लंबाई 143 फुट तथा आकार सिगार के जैसा था।

प्रश्न 9. 'एयरशिप नंबर वन' को किसने बनाया था?

उत्तर : एयरशिप नंबर वन को अल्बइर्टो सैटोस-डुमौट ने बनाया था।

प्रश्न 10. भापगाड़ी के निर्माण के बारे में संक्षेप में बताइए।

उत्तर : 1842 में विलियम हैंसन तथा जॉन स्ट्रिंगफैलो ने हवाई भापगाड़ी का नक्शा बनाया था। जिसका निर्माण 1848 में किया गया। इसके इंजन का भार 9 पौंड से कम था।

प्रश्न 11. राइट बंधुओं ने अपनी सफलतम प्रथम हवाई उड़ान कब तथा कहाँ भरी?

उत्तर : राइट बंधुओं ने अपनी सफलतम प्रथम हवाई उड़ान 1900 में किट्टी हॉक नामक स्थान पर भरी थी।

प्रश्न 12. किट्टी हॉक के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर : किट्टी हॉक कैरोलिना में स्थित एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ 17 दिसंबर 1903 में राइट बंधुओं ने अपनी पहली हवाई उड़ान भरी थी।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. वायु में उड़ने वाले गुब्बारों की कहानी कब तथा कैसे शुरू हुई ? सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

उत्तर : वायु में उड़ने वाले गुब्बारों की कहानी फ्रांस में शुरू हुई थी। यहाँ पर रहने वाले दो भाइयों जोजेफ तथा जैक्स मोंटगोल्फर ने चिमनी से निकल कर धुएँ को ऊपर आकाश में जाते हुए देखा। इसी से प्रेरित होकर 1783 में उन्होंने गुब्बारे में धुआँ भरकर लगभ 6,000 फुट की ऊँचाई पर उड़ाया।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी भौतिक शास्त्री जे. ए. सी. चार्ल्स द्वारा बनाए एवं उड़ाए गए गुब्बारे की चर्चा विस्तार से कीजिए।

उत्तर : फ्रांसीसी भौतिक शास्त्री जे. ए. सी. चार्ल्स ने रबड़ से पुता हुआ एक गुब्बारा बनाया और उसमें हाइड्रोजन गैस भरी। यह गुब्बारा पहले उड़ाए गए गुब्बारों की तुलना में अधिक तीव्रता से उड़ा। यह लगभग 45 मिनट तक उड़ता रहा तथा 16 मील से अधिक दूरी पर पहुँच कर धरती पर उतरा। इस गुब्बारे को देखकर खेतों में काम करने वाले लोगों ने इसे दैत्य समझकर इसे मारने का प्रयास किया था।

प्रश्न 3. कैप्टन कूते कौन थे तथा उन्होंने युद्ध के जनरल की क्या तथा कैसे सहायता की ?

उत्तर : कैप्टन कुते फ्रांसीसी क्रांतिकारी सेना के अधिकारी थे। उन्होंने युद्ध में काम लाया जाने वाला पहला गुब्बारा बनाया था। 1794 में फ्लुरस के युद्ध में कैप्टन कूते के संकेत द्वारा जनरल जूदाँ को सूचना पहुँचाई गई थी। जनरल ने इस सूचना के आधार पर युद्ध की बदली हुई परिस्थितियों का लाभ उठाया और विजय पाई।

प्रश्न 4. प्रथम वायुपोत का विस्तृत वर्णन करें।

उत्तर : फ्रांसीसी इंजीनियर हेनरी जिफोर्ड ने पहला सफल वायुपोत बनाया था। इस वायुपोत का आकार सिगार के समान तथा लंबाई 143 फुट थी। इसमें तीन हार्सपावर का एक भाप का इंजन लगा हुआ था। यह इंजन प्रोपेलर

टोकरी से जुड़ा हुआ था। इसकी चाल बहुत धीमी थी, इसी कारण तेज हवा इस वायुपोत को पीछे फेंक देती थी। अत: फिर भी यह वायुयान ने निर्माण की एक अच्छी शुरुआत थी।

प्रश्न 5. राइट बंधुओं के नाम तथा विमान निर्माण में उनके योगदान की पूर्ण व्याख्या करें।

उत्तर : विल्बर तथा ओरविल राइट दो सगे भाई प्रारंभ में साइकिल बनाने का काम करते थे। 1900 में उन्होंने वायुपोतों के अनेक मॉडल बनाकर उन्हें हवाई सुंरगों में परखा। ये दोनों भाई इसी प्रकार प्रयत्न करते रहे तथा सफलतम विमान बनाने में सफल हुए। 1908 में उन्होंने अमेरिकी सेना के लिए सैनिक विमान तथा 1909 में एक यात्री विमान बनाया। अत: हम राइट बंधुओं को विमान सेवा का जनक कह सकते हैं।

भाषा-मंच

1. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :**

परी – परियाँ   इच्छा – इच्छाएँ   गैस – गैसें
चिमनी – चिमनियाँ   थैली – थैलियाँ   गुब्बारा – गुब्बारे   परिधि – परिधियाँ
ऊँचाई – ऊँचाइयाँ   गाड़ी – गाड़ियाँ   आकृति – आकृतियाँ   यात्री – यात्रियों
दूरी – दूरियाँ

2. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :**

स्वच्छंद – परतंत्र   दूर – पास   मानव – दानव
नई – पुरानी   तैरना – डूबना   सफल – असफल
निर्माण – ध्वंस   पहला – आखिरी   आरंभ – अंत

3. **कुछ शब्द जो समूह का बोध कराते हैं, हमेशा एक वचन में ही प्रयोग होते हैं। जैसे- भीड़, पुलिस, जनता आदि।**

इस पाठ से कोई पाँच ऐसे ही समूहवाची शब्द ढूँढकर लिखिए :

कक्षा, दल, सेना, टोली, जत्था आदि।

4. **निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा के भेद बताइए :**

आकाश – जातिवाचक   माला – समूहवादी
वायुपोत – जातिवाचक   पक्षी – जातिवाचक
मिठाई – जातिवाचक   जोज़ेफ – व्यक्तिवाचक
बुढ़ापा – भाववाचक   थैला – जातिवाचक

5. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए :**

(क) उसने गुब्बारा हवा में उड़ाया।
(ख) तुम अपने वायुयान में बैठो।
(ग) मुझे घर नहीं जाना है।
(घ)हम अपने घर कल जाएँगे।

6. **निरर्थक शब्दों से बने इन शब्द-युग्मों को देखिए तथा ऐसे ही कुछ शब्द-युग्म लिखिए :**

ऊबड़-खाबड़   ऊट-पटाँग   उलटा-पुलटा   झूठ-मूठ
पानी-वानी   रोटी-वोटी   वौल-तौल   पतला-वतला

परख के मंच पर

प्रश्न 1. यदि पृथ्वी पर वायु की उपस्थिति न होती, तो क्या वायुयानों का उड़ना संभव हो पाता? सोचिए तथा बताइए।

उत्तर : यदि पृथ्वी पर वायु की उपस्थिति न होती, तो वायुयान उड़ नहीं पाते। क्योंकि इन्हें वायुदबाव ही ऊपर उठाता है।

प्रश्न 2. वायु की तुलना में हाइड्रोजन से भरे गुब्बारों को उड़ाना अधिक सरल तथा सफलतापूर्ण था। बताइए क्यों?

उत्तर : हाइड्रोजन वायु की अपेक्षा काफी हल्की होती है, इसीलिए इससे भरे गुब्बारें को उड़ाना अधिक सरल काम था।

प्रश्न 3. यदि भाप के इंजन से चलने वाले वायुयान बनते और सफलतापूर्वक उड़ते तो बताइए उनके सर्वाधिक लोकप्रिय ईंधन का क्या होता तथा क्यों?

उत्तर : यदि भाप के इंजन से चलने वाले वायुयान बनते तो उनके लोकप्रिय ईंधन अर्थात् कोयले के भंडार बड़ी तेजी से समाप्त हो जाते।

प्रश्न 4. वर्तमान में वायु परिवहन की स्थिति क्या है?

उत्तर : वर्तमान में वायु परिवहन विश्व का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण परिवहन माध्यम है। इसने एक देश को दूसरे के साथ जोड़ दिया है तथा पूरे विश्व को एक छोटा-सा गाँव बना दिया है।

अध्याय - 10

जबानी बताओ

प्रश्न 1. भिखमंगे सामान्यत: कहाँ-कहाँ पाए जाते हैं?

उत्तर : भिखमंगे सामान्यत: मंदिरों, मस्जिदों के आसपास तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भीख माँगते पाए जाते हैं।

प्रश्न 2. हम किसी भिखारी को साधारणत: क्या भीख देते हैं?

उत्तर : हम किसी भिखारी को साधारणत: भोजन, कपड़े तथा पैसे के रूप में भीख देते हैं।

प्रश्न 3. साधारण भिखारी कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर : साधारण भिखारी मैले-कुचैले कपड़े पहने निर्धन दिखाई देते हैं।

प्रश्न 4. नई प्रजाति के भिखारी देखने में कैसे लगते हैं?

उत्तर : नई प्रजाति के भिखारी सफ़ेद खादी के वस्त्र पहने देश के सेवकों के रूप में दिखाई देते हैं।

प्रश्न 5. क्या नई प्रजाति के भिखारी कभी साधारण जनता से भीख माँगते हैं?

उत्तर : हाँ, नई प्रजाति के भिखारी वोटों के रूप में साधारण जनता से भीख माँगते हैं।

कलम उठाओ।

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. व्यक्ति भिखारी कब बनता है?

उत्तर : व्यक्ति सामान्यत: निर्धनता की स्थिति में ही भिखारी बनता है।

प्रश्न 2. किसी भिखारी की सामान्य दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर : भिखारी सामान्यत: हाथ में कटोरा लिए और मैले-कुचैले कपड़े पहने सार्वजनिक स्थलों पर भीख माँगते दिखाई देते हैं।

प्रश्न 3. क्या हमें भिखमंगों पर करुणा दिखानी चाहिए?

उत्तर : हमें भिखमंगों पर करुणा दिखाने के बजाय उनका उचित मार्गदर्शन करना तथा सहारा बनना चाहिए।

प्रश्न 4. नई प्रजाति के भिखमंगे साधारण भिखमंगों से कैसे भिन्न हैं?

उत्तर : नई प्रजाति के भिखमंगे संपन्न और सुखी होते हैं।

प्रश्न 5. नई प्रजाति के भिखमंगे किससे भीख माँगते हैं?

उत्तर : नई प्रजाति के भिखमंगे साधारण जनता अर्थात् वोटरों से भीख माँगते हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. भिखमंगे समाज की किस सच्चाई को प्रकट करते हैं? व्यंग्य के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : सामान्य भिखारी समाज की उस सच्चाई को प्रकट करते हैं जिसमें अमीर-गरीब का भेद विद्यमान पाया जाता है। लोग निर्धनता के कारण हाथ में कटोरा लेकर पैसे- दो पैसों की भीख माँगने पर विवश होते हैं। इसके विपरीत नई प्रजाति के भिखमंगे समन्य जनता से वोटों की भीख माँगकर बड़े नेता बनकर समाज व राष्ट्र के विकास के नाम पर लाखों-करोड़ों का धन डकार जाते हैं। अत: ये समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को प्रकट करते हैं।

प्रश्न 2. यह व्यंग्य समाज के किस वर्ग की वास्तविकता को दर्शाता है तथा कैसे?

उत्तर : यह व्यंग्य समाज में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार को दर्शाता है इसमें बताया गया है कि समाज में उपस्थित भ्रष्ट राजनीतिक किस तरह भोली-भाली जनता को अपने प्रभाव में लेकर उनके वोटों के बल पर राजनीतिक पद हासिल करते हैं तथा फिर अपने पद के बल पर कैसे काला धन जमाकर रातोंरात धन और ताकत के मालिक बन

बैठते हैं। ऐसे नेता समाज व राष्ट्र के लिए विष के समान हैं।

प्रश्न 3. भ्रष्ट राजनेता राष्ट्र व समाज को कैसी हानि पहुँचा सकते हैं?

उत्तर : भ्रष्ट राजनेता समाज व राष्ट्र के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं। क्योंकि समाज व राष्ट्र के विकास का कार्यभार इन्हीं के कंधों पर होता है। जब ये नेता ही भ्रष्टाचार में संलिप्त होते हैं तो समाज व राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर बढ़ने के बजाय अवनति के गड्ढ में गिरता जाता है। इस तरह सामान्य आदमी का जीवन नरक बन जाता है। अत: भ्रष्ट राजनेता समाज एवं राष्ट्र को गंभीर हानि पहुँचाते हैं।

प्रश्न 4. इस व्यंग्य की भाषा-शैली का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : कृष्ण कुमार 'दिलजद' द्वारा रचित यह लघु व्यंग्य भ्रष्ट राजनीति पर गंभीर कुठाराघात करता है। इसकी भाषा अत्यंत सरल, स्पष्ट तथा विलक्षण है। साधारण बिंबों और उपमाओं का प्रयोग इसकी भाषा और इसकी शैली को बहुत अधिक रोचक तथा मनोरंजक बना देता है। अत: इस व्यंग्य की भाषा-शैली व्यंग्य लेखन विधा के अनुकूल है।

भाषा मंच

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

गली – गलियाँ कटोरा – कटोरे आँख – आँखें
लाचारी –लाचारियाँ प्रजाति – प्रजातियाँ बात – बातें
थैली – थैलियाँ बकरी – बकरियाँ झोली – झोलियाँ

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :

गरीबी – अमीरी अपना – पराया पिछला – अगला
पैदा – नपैद मान – अपमान असल – नकल
साधारण – असाधारण आना – जाना मुक्त – बंदी

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :

लाचार – असहाय – भगवान किसी को लाचार न बनाए।
व्यवसाय – धंधा – व्यवसाय ईमानदारी से करना चाहिए।
वापस – लौटना – उसके वापस आने पर ही बात करूँगा।
भीख – भिक्षा – भीख माँगना सामाजिक बुराई है।
दबंग – प्रभावशाली – दबंग नेता के आगे सभी सिर झुका कर खड़े रहते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए :

परिवेश – परि + वेश भिखमंगा – भीख + मंगा
प्रजाति – प्र + जाति अनावश्यक– अन + आवश्यक

5. निम्नलिखित के लिए विशेषण लिखिए :

लालच – लालची ग्राम – ग्रामीण मिठास – मीठा
चमक – चमकीली नमक – नमकीन समय – सामायिक
अपमान – अपमानित धर्म – धार्मिक ज़हर – ज़हरीला
सुंदरता – सुंदर समाज – सामाजिक विदेश – विदेशी

रचनात्मक उड़ान

1. **इस व्यंग्य से प्रेषित होने वाली सीख को अपने शब्दों में लिखिए।**

   इस व्यंग्य से हमें सीख मिलती है कि हमें भ्रष्ट तथा अपराधिक प्रवृत्ति के नेताओं को अपना मत या वोट कभी नहीं देना चाहिए। हमें केवल स्वच्छ छवि वाले राजनेताओं को ही चुनना चाहिए।

2. **यदि अपने भावी जीवन में आपको राजनीति का अवसर मिले, तो बताइए आप किस तरह की राजनीति पसंद करेंगे?**

   स्वयं कीजिए

परख के पंच पर

1. **लेखक इस व्यंग्य के माध्यम से सामान्य जनता को जो संदेश देता है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।**

   लेखक इस व्यंग्य के माध्यम से सामान्य जनता को यह संदेश देना चाहता है कि देश के भ्रष्ट नेताओं की पहचान कर उन्हें राजनीति के क्षेत्र से बाहर कर देना चाहिए। केवल राष्ट्रभक्त तथा जनसेवक नेताओं को ही चुनाव में जीताकर सरकार बनाने के लिए आगे लाना चाहिए। ऐसे नेता ही समाज व राष्ट्र का वास्तविक भला कर सकते हैं।

अपना विकास अपने हाथ।

स्वयं कीजिए।

चित्रात्मक बोध

इस चित्र के भावार्थ को व्यंग्य के रूप में लिखिए।

जो लोग तलवार उठाते हैं, वे केवल गर्दनें काट सकते हैं, दुनिया नहीं बदल सकते। जबकि कलम एक छोटी-सी वस्तु होकर भी ऐसे शब्द लिख देती है जो दुनिया को बदल देती है। इसलिए सुनो भाई, जब बदलनी हो दुनिया तो तलवार नहीं, कलम उठाओ। कलम किसी को फाँसी पर चढ़वा सकती है तो किसी को फाँसी की सजा से मुक्त भी करवा सकती है। अत: कलम की महिमा महान है।

अध्याय - 11

जबानी बताओ

प्रश्न 1. क्या आपने कभी कोई बहुरूपिया देखा है?

उत्तर : हाँ, मैंने बहुरूपिया देखा है।

प्रश्न 2. कुछ लोग दूसरों की नकल क्यों करते हैं?

उत्तर : कुछ लोग मनोरंजन के उद्देश्य से दूसरों की नकल करते हैं।

प्रश्न 3. क्या बहुरूपिया होना खराब बात है?

उत्तर : नहीं, बहुरूपिया होना खराब बात नहीं है।

प्रश्न 4. महात्मा और महात्मा के वेषधारी बहुरूपिए में क्या अंतर है?

उत्तर : महात्मा वास्तव में महात्मा होता है जबकि बहुरूपिया केवल महात्मा का अभिनय ही करता है, असल में महात्मा होता नहीं है।

प्रश्न 5. ईमानदारी क्यों ज़रूरी है?

उत्तर : जीवन को सुखपूर्वक जीने के लिए ईमानदारी ज़रूरी है।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. बहुरूपिया किस-किस का वेष धारण करता है?

उत्तर : बहुरूपिया तरह-तरह के वेश धारण करता है।

प्रश्न 2. लेखक ने किस भाषा की लोक-कथा सुनी थी?

उत्तर : लेखक ने राजस्थानी लोक-कथा सुनी थी।

प्रश्न 3. बहुरूपिए ने साधु का वेष क्यों बनाया?

उत्तर : बहुरूपिए ने अमीर लोगों को खुश करने के लिए साधु का वेष बनाया।

प्रश्न 4. सेठ रूढ़िवादी था अथवा नहीं?

उत्तर : सेठ रूढ़िवादी नहीं था, किंतु अपनी बीमार पत्नी के कारण उसे रूढ़िवादी बनना पड़ा।

प्रश्न 5. सेठ साधु के पास क्यों गया?

उत्तर : सेठ अपनी बीमार पत्नी के इलाज के लिए साधु के पास गया।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. साधु की ख्याति दूर-दूर तक क्यों फैल गई?

उत्तर : साधु ने एक सच्चे महात्मा का रूप धारण कर ठीक उसी तरह एक झोंपड़ी बनाकर वहाँ लोगों को धार्मिक प्रवचन देना प्रारंभ कर दिया था। लोग उसके प्रवचनों से गंभीर रूप से प्रभावित हुए थे तथा साधु में गहरा विश्वास करने लगे थे। इसी कारण धीरे-धीरे साधु की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी।

प्रश्न 2. साधु ने सेठानी को कैसे ठीक कर दिया?

उत्तर : साधु ने सेठानी को अपनी धूनी की राख से ठीक किया। सेठानी सात दिनों तक रोजाना साधु के पास आई तथा साधु ने अपनी धूनी से चुटकी भर राख उठाकर उस पर डाली। इस तरह सेठ की पत्नी धीरे-धीरे ठीक हो गई।

प्रश्न 3. साधु ने सेठ का धन क्यों लौटा दिया?

उत्तर : साधु ने सेठ का सारा धन लौटा दिया, क्योंकि साधु के लिए हर तरह का धन मिट्टी के समान होता है। वह माया के मोह में पड़कर अपना महात्मय गवाँना नहीं चाहता था। वह तो सबको यही उपदेश देता था कि माया का मोह छोड़कर भगवान भजन में ध्यान लगाएँ। अत: उसने सेठ के देने पर भी धन नहीं लिया, बल्कि उसे उसी अवस्था में लौटा दिया।

प्रश्न 4. सेठ ने साधु से क्या कहा और क्यों?

उत्तर : सेठ ने साधु से कहा – "इनाम तो मैं तुझे दूँगा। सचमुच तूने अपने काम में कमाल कर दिया है। लेकिन एक बात बता – कल जब मैं अपनी सारी संपत्ति आपके पास लाया था, तो तुमने उसे स्वीकार क्यों नहीं किया? अगर तू उसे ले लेता तो आज तू सेठ बन जाता। तुझे इस तरह इनाम माँगने की आवश्यकता न पड़ती।"

प्रश्न 5. ऐसी ही एक कहानी स्वयं लिखिए।

उत्तर : स्वयं कीजिए।

भाषा मंच

(अ) निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए :

1. आनंद + अनुभूति = आनंदानुभूति
2. प्रसंग + अनुकूल = प्रसंगानुकूल
3. मस्तक + अभिषेक = मस्तकाभिषेक
4. हर्ष + अतिरेक = हर्षातिरेक
5. शेष + अंश = शेषांश

(ब) निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए :

विच्छिन्न, त्रिपुंड, वर्ण्य, क्षत्रिय, शत्रुघ्न, सुषुम्ना

स्वयं कीजिए।

(स) निम्नलिखित वाक्यों में से कारक शब्दों को रेखांकित कीजिए :

1. साधु **ने** सेठ **का** रूप बनाया।
2. सेठानी सेठ **की** पत्नी थी।
3. सेठ बोला–"**अरे!** ये तुम हो।"
4. सेठानी **ने** कहा– "**अहा!** मैं ठीक हो गई।"
5. ढोंगी सेठ **को** मारने दौड़ा।

परख के मंच पर

स्वयं कीजिए

अध्याय - 12

जबानी बताओ

प्रश्न 1. राजा उत्तानपाद की कितनी रानियाँ थीं?

उत्तर : राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ थीं।

प्रश्न 2. राजा उत्तानपाद की बड़ी रानी का क्या नाम था?

उत्तर : राजा उत्तानपाद की बड़ी रानी का नाम सुनीति था।

प्रश्न 3. राजा उत्तानपाद की छोटी रानी का स्वभाव कैसा था?

उत्तर : राजा उत्तानपाद की छोटी रानी का स्वभाव अच्छा नहीं था।

प्रश्न 4. राजा ने अपनी बड़ी रानी सुनीति का परित्याग किसके कहने पर किया?

उत्तर : राजा ने अपनी छोटी रानी सुरुचि के कहने पर ही बड़ी रानी सुनीति का परित्याग किया।

प्रश्न 5. राजमहिषी कौन-सी रानी थी?

उत्तर : राजमहिषी बड़ी रानी थी।

प्रश्न 6. सुरुचि, सुनीति के बारे में कैसे विचार रखती थी?

उत्तर : सुरुचि, सुनीति के बारे में बुरे विचार रखती थी।

कलम उठाओ।

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. पति द्‌वारा घर से निकाले जाने पर सुनीति कहाँ रहने लगी?

उत्तर : पति द्‌वारा घर से निकाले जाने पर सुनीति महर्षि अत्रि के आश्रम में रहने लगी।

प्रश्न 2. सुनीति के महल से चले जाने के बाद सुरुचि खुश क्यों थी?

उत्तर : सुरुचि इसी कारण खुश थी, क्योंकि अब राजा उत्तानपाद केवल उसी के वश में होकर रह गया था।

प्रश्न 3. सुरुचि किसे राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी?

उत्तर : सुरुचि अपने पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी।

प्रश्न 4. ध्रुव कहाँ का अधिपति बना?

उत्तर : ध्रुव ध्रुवलोक का अधिपति बना था।

प्रश्न 5. सुरुचि तथा सुनीति के स्वभाव में क्या अंतर था?

उत्तर : सुनीति का स्वभाव सरल, सहनशील तथा अच्छा था, जबकि सुरुचि बुरे स्वभाव वाली महिला थी।

प्रश्न 6. सुरुचि ध्रुव को राजा से दूर क्यों रखना चाहती थी?

उत्तर : सुरुचि अपने पुत्र को ही राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी। इसीलिए वह ध्रुव को राजा से दूर रखना चाहती थी।

प्रश्न 7. बालक ध्रुव को उसकी माता ने क्या समझाया?

उत्तर : माता ने बालक को समझाया कि - तुम अपने पिता की गोद के बजाय परम पिता परमेश्वर की गोद में बैठो।

प्रश्न 8. बालक ध्रुव वन में क्यों गया?

उत्तर : बालक ध्रुव तपस्या करने के उद्‌देश्य से वन में गया।

प्रश्न 9. बालक ध्रुव का व्यक्तित्व कैसा था?

उत्तर : बालक ध्रुव का व्यक्तित्व एक साधु बालक के समान था।

प्रश्न10. पिता की गोद से उतार कर सुरुचि ने ध्रुव से क्या कहा?

उत्तर : पिता की गोद से उतार कर सुरुचि ने बालक ध्रुव से कहा कि अगर तुम्हें महाराज की गोद में बैठना था, तो उस अभागी माता के बजाय उसकी अपनी कोख से जन्म लेना था।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. राजा उत्तानपाद ने सुनीति का परित्याग क्यों किया? विस्तार से बताइए।

उत्तर : राजा उत्तानपाद अपनी पत्नी सुनीति को बहुत अधिक प्रेम करते थे। राजमहल के सभी कार्यों में उसे उच्च स्थान तथा सम्मान प्रदान करते थे। उनकी छोटी रानी सुरुचि अत्यधिक चतुर तथा बुरे स्वभाव वाली महिला थी। उससे सुनीति का इतना सम्मान सहन नहीं होता था। वह राजा को अपने वंश में रखना चाहती थी। इसी कारण उसने राजा को सुनीति के विरुद्‌ध भड़काकर महल से निकलवा दिया।

प्रश्न 2. पिता की गोद से उतारे जाने के बाद दु:खी बालक को सुनीति ने क्या शिक्षा दी तथा उसका क्या परिणाम निकला?

उत्तर : सुनीति ने दु:खी बालक ध्रुव को समझाया कि वह अपने पिता की गोद में स्थान पाने के बजाय परम पिता परमेश्वर की गोद में बैठने का प्रयास करे। परम पिता परमेश्वर की गोद से ऊँची संसार में और कोई गोद नहीं है। अपनी माता से प्रेरित होकर बालक ध्रुव ने कठोर तपस्या की तथा एक दिन ध्रुवलोक का अधिपति बना।

प्रश्न 3. इस कहानी से मिलने वाली सीख को अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर : इस कहानी से सीख मिलती है कि मनुष्य का बुरा स्वभाव स्वयं उसे ही पतन की ओर ले जाता है, जबकि उदात स्वभाव तथा परमेश्वर के प्रति सच्ची लगन और नि:स्थार्थ भाव उसे संसार में ऊँचा स्थान दिलाता है। जैसे कि बालक ध्रुव को परमेश्वर ने ध्रुवलोक का अधिपति बनाया।

भाषा मंच

1. इन शब्दों के अर्थ बताइए :

उत्कंठा – लालसा द्‌वेष – वैर क्रोधाग्नि – क्रोध रूपी अग्नि
सांत्वना – सहानुभूमि विवेक – धैर्य तिरस्कार – अपमान

2. निम्नलिखित विशेषणों से संज्ञा बनाइए :

परित्यक्ता – परित्यक्त धार्मिक – धार्मिकता
सात्विक – सात्विकता तेजस्वी – तेज
व्यथित – व्यथा तिरस्कृत – तिरस्कार

3. लिंग बदलिए :

गुणवान – गुणवती तपस्वी – तपस्विनी
परित्यक्त – परित्यक्ता उत्तराधिकारी – उत्तराधिकारिणी
अभागा – अभागी परमेश्वर – परमेश्वरी

4. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए :

राजा – रंक सुंदर – असुंदर दिन – रात

प्रधान – अप्रधान   आशा – निराशा   बालक – बड़ा
इतना – उतना   देखना – सुनना   समीप – दूर

5. **निम्नलिखित शब्दों को पढ़ो :**

राजमहल, यज्ञशाला, बैलगाड़ी, रसोईघर

ये शब्द तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं। तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है, यथा- राजमहल में 'महल' प्रधान है, क्योंकि यहाँ महल का बोध हो रहा है। इसी तरह यज्ञशाला में 'यज्ञ' की ओर नहीं, बल्कि 'शाला' की ओर संकेत किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जिस समास का दूसरा पद प्रधान होता है, वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

रचनात्मक उड़ान

1. **इस पाठ में प्रयुक्त शब्दों की वर्तनी के नए एवं पुराने रूप देखिए :**

पुराना रूप	**नया रूप**	**पुराना रूप**	**नया रूप**
सुन्दर	सुंदर	पसन्द	पसंद
उत्तानपाद	उत्तानपाद	द्वारा	द्‌वारा
सम्बन्ध	संबंध	किन्तु	किंतु

2. **इस कहानी से मिलने वाली सीख को सरल शब्दों में प्रकट कीजिए :**

इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि बुरी प्रवृत्ति हमेशा हानि पहुँचाती है तथा अच्छी प्रवृत्ति सुख तथा संतोष प्रदान करती है।

परख के पंच पर

प्रश्न 1. बालक ध्रुव के व्यक्तित्व के बारे में बताइए।

उत्तर : बालक ध्रुव एक राजा का पुत्र होते हुए भी एक साधारण ऋषिकुमारों से जीवन व्यतीत करता है। उसे राजसी सुविधााएँ तो प्राप्त होती ही नहीं, बल्कि पिता से पुत्र का स्नेह भी प्राप्त नहीं हो पाता। फिर भी बालक अपनी माता की प्रेरणा से जंगल में जाकर कठोर तप करता है तथा परमेश्वर को प्रसन्न कर मनवांछित फल पाता है। बालक ध्रुव ने जो तप किया उसे व्यस्क व्यक्ति भी साधारणत: नहीं कर पाता। अत: बालक ध्रुव को हम वास्तव में एक पूर्ण ऋषि कह सकते हैं।

प्रश्न 2. यदि बालक ध्रुव के स्थान पर आप होते, तो बताइए पिता की गोद से उतारे जाने पर अपनी सौतेली माता को क्या ज़वाब देते?

उत्तर : स्वयं कीजिए।

प्रश्न 3. सुरुचि का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर : सुरुचि राजा उत्तानपाद की छोटी पत्नी थी। वह अत्यधिक सुंदर थी। परंतु उसकी इससे भी बड़ी विशेषता यह थी कि वह बहुत अधिक चतुर तथा बुरी प्रवृत्ति वाली महिला थी। उसने सुनीति की सादगी का लाभ उठाते हुए उसे राजा की नजरों से गिराया तथा उसे राजमहल से निर्वासित करके ही दम लिया। अत: सुरुचि में केवल अवगुण और द्‌वेष जैसे भाव ही दिखाई पड़ते हैं।

स्मरण परीक्षा

स्वयं कीजिए।

अपना विकास अपने हाथ।

1. **इस कहानी से कोई पाँच तद्भव तथा पाँच तत्सम शब्दों का चयन कीजिए तथा उनके अर्थ बताते हुए वाक्य बनाइए।**

   तत्सम शब्द

   पुत्र – बेटा = पुत्र और पिता में प्रेम होना चाहिए।
   मस्तक – माथा = सदा मस्तक उठाकर जियो।
   विवाह – ब्याह = बेटी के विवाह में पिता ने बड़ी धनराशि खर्च की।
   परीक्षा – परख = नरेश अपनी परीक्षा में पास हो गया।
   स्नेह – नेह = अपने से छोटों को पूरा स्नेह दो।

   तद्भव शब्द

   माँ – माता = अपनी माँ का सदैव कहना मानो।
   राजा – नरेश = राजा उत्तानपाद ने सुनीति को महल से निर्वासित कर दिया।
   साँप – सर्प = साँप को देखते ही नेवला उस पर झपट पड़ा।
   सूरज – सूर्य = सूरज निकलते ही किसान खेतों की ओर चल पड़े।
   हृदय – हय = सुनीति का हृदय निर्मल था।

2. **ऐसी ही किसी कहानी को पढ़िए तथा उसका सार अपने शब्दों में लिखिए।**

   स्वयं कीजिए।

अध्याय - 13

जबानी बताओ

प्रश्न 1. इस कविता में बच्ची किसकी गोद में सोते रहने की इच्छा प्रकट करती है?

उत्तर : बच्ची अपनी माँ की गोद में सोते रहने की इच्छा प्रकट करती है।

प्रश्न 2. बच्ची अपनी माँ के साथ-साथ फिरते रहने की बात क्यों कहती है?

उत्तर : बच्ची हमेशा अपनी माँ के आँचल की छाँव में रहना चाहती है, इसीलिए वह अपनी माँ के साथ-साथ फिरते रहने की बात करती है।

प्रश्न 3. माँ बच्ची से किस तरह छल करती है?

उत्तर : माँ बच्ची को बड़ा बनाकर छल करती है।

प्रश्न 4. माँ अपने बच्चों के कौन-कौन से कार्य अपने हाथों से करती है?

उत्तर : माँ अपने बच्चों को नहलाती, सजाती, खिलाती और उन्हें कहानियाँ आदि सुनाती है।

प्रश्न 5. माँ बच्चों को कौन-सी कहानी सुनाती है?

उत्तर : माँ बच्चों को परियों की कहानी सुनाती है।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. माँ के आँचल की महिमा का वर्णन कीजिए।

उत्तर : माँ के आँचल की महिमा अनोखी होती है। इस आँचल की स्नेह भरी छाया में बच्चे को अतुल्य सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न 2. माँ के लिए सबसे छोटे बच्चे का क्या महत्त्व होता है?

उत्तर : माँ का मन अपने सबसे छोटे बच्चे में अधिक प्रगाढ़ता से रमा होता है।

प्रश्न 3. माँ बच्चे को उसके किस सुख से वंचित करती है? अथवा बड़ा होने पर बच्चा माँ से मिलने वाले किस सुख से वंचित हो जाता है?

उत्तर : बड़ा होने पर बच्चे से उसकी माँ की गोद छिन जाती है तथा इस तरह वह आँचल के स्नेह से वंचित हो जाता है।

प्रश्न 4. बच्ची अपनी माँ से किस तरह की शिकायत करती है?

उत्तर : बच्ची अपनी माँ से यह शिकायत करती है कि उसने उसे बड़ा बनाकर उसके साथ छल किया है।

प्रश्न 5. बच्ची को नहला-धुलाकर कौन सजाता है?

उत्तर : बच्ची को नहला-धुलाकर उसकी माता सजाती है।

प्रश्न 6. बच्ची अपनी माँ के किस स्नेह की छाया में जीवन व्यतीत करना चाहती है?

उत्तर : बच्ची अपनी माँ की गोद में लेटकर उसके स्नेह भरे आँचल की छाया में अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. कविता के आधार पर ममत्व के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : माँ का स्नेह अथवा ममत्व बच्चे के लिए अमृत के समान होता है। बच्चा अपनी माँ के निकट रहकर अतुल्य

सुख महसूस करता है। उदाहरतण: इस कविता के अनुसार बच्ची अपने बड़े होने को भी अपनी माँ द्वारा उसके साथ किया जाने वाला छल बताती है। अत: वह बच्ची ही बनी रहकर हमेशा अपनी माँ के आँचल को पकड़कर घूमना चाहती है। अत: इससे स्पष्ट हो जाता है कि ममत्व ही सब सुखों की खान है।

प्रश्न 2. माँ की कौन-सी बात बच्ची को अच्छी नहीं लगी तथा क्यों?

उत्तर : बच्ची हमेशा बच्ची ही बनी रहकर अपनी माँ में छिपी रहने की इच्छा रखती है जबकि समय के साथ-साथ वह बड़ी होती जाती है और उसकी माता की गोद उससे दूर हो जाती है। बच्ची अपने बड़े हो जाने को दोष भी अपनी माँ को ही देती है। अत: उसे अपनी माँ की यही बात अच्छी नहीं लगी कि उसने उसे बड़ा बना दिया।

प्रश्न 3. कविता की भाषा-शैली का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित इस कविता की भाषा-शैली अत्यंत सुबोध है। कवि ने वाक्यों को लघुता प्रदान करने के साथ ही साथ सरल तथा स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया है। बिंबों तथा उपमाओं का इस तरह से प्रयोग किया है कि उनका अर्थ स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है।

प्रश्न 4. बच्ची अपनी माँ से किन-किन कार्यों के न करने की शिकायत करती है?

उत्तर : बच्ची अपनी माँ से शिकायत करती है कि वह अब उसे पहले की तरह नहलाती, खिलाती और सजाती नहीं है तथा न ही दिन-रात उसके साथ-साथ फिरती है। अत: बच्ची माँ द्वारा छल करने की बात करती है।

प्रश्न 5. बच्ची अपनी माँ के आँचल में किस तरह का सुख अनुभव करती है?

उत्तर : बच्ची अपनी माँ के आँचल को अपने सभी सुखों का आधार समझती है। उसे अपनी माँ के आँचल में विशेष स्नेह तो मिलता ही है साथ ही वह अपनी माँ की निकटता का विशेष सुख भी पाती है। अत: बच्ची को अपनी माँ के आँचल में खास स्नेह की अनुभूति होती है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पदों की व्याख्या कीजिए :

(क) तेरा आँचल पकड़-पकड़कर
फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ!

भावार्थ – बच्ची अपनी माँ से शिकायत करते हुए कहती है कि मैं सदैव तेरे आँचल को पकड़कर तुम्हारे साथ-साथ रहना चाहती हूँ। जीवन भर तुम्हारे हाथ को पकड़कर ही चलना चाहती हूँ। अर्थात् मैं तुमसे दूर रहकर जीवन नहीं बिताना चाहती।

(ख) अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!

भावार्थ – बच्ची अपनी माँ से शिकायत करते हुए कहती है कि ओ माँ! अब तुम पहले की तरह न तो मुझे अपने हाथों से खाना खिलाती हो, न ही मेरे मुँह को धोकर मेरे शरीर को धूल मुक्त करके सजाती हो। इसके अलावा मुझे खेलने के लिए खिलौने भी नहीं देती हो तथा न ही परियों की कहानियाँ सुनाकर मेरा मन बहलाती हो। अत: बच्ची अपनी माँ से नाराज है।

(ग) छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,
कहूँ-दिखा दे चंद्रोदय!

भावार्थ – बच्ची अपनी इच्छा प्रकट करते हुए अपनी माँ से कहती है कि माँ, मुझे बड़ा मत करो। मैं हमेशा बच्ची बनकर तुम्हारे आँचल में बिना किसी लालच और भय के छिपी रहना चाहती हूँ तथा तुमसे उगते हुए चाँद को दिखाने की बात कहती हूँ।

भाषा-मंच

1. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :**

गोदी – गोदियाँ   माता – माताएँ   खिलौना – खिलौने
परी – परियाँ   कहानी – कहानियाँ   कविता – कविताएँ
पत्ती – पत्तियाँ   लकड़ी   लकड़ियाँ

2. **निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए :**

माँ – अंबा   माता   जननी
बच्ची – बाला   बालिका   लड़की
चंद्रमा – चंद्र   चाँद   शशि
स्वर्ग – देवलोक   जन्नत   सुरलोक

3. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थों में अंतर स्पष्ट कीजिए :**

(क) दु:ख – समान्य दु:ख
शोक – किसी की मृत्यु आदि पर दु:ख प्रकट करना।
(ख) भ्रम – मिथ्या ज्ञान
संदेह – अनिश्चयात्मक ज्ञान
(ग) पुत्र – अपना बेटा।
बालक – कोई भी बच्चा।
(घ)इच्छा – किसी वस्तु को पाने की स्वाभाविक चाह
लालसा – चाह की तीव्रता
(ड़) पुत्री – अपनी बेटी
बालिका – कोई भी लड़की
(च) उत्साह – जोश
साहस – हिम्मत

4. **निम्नलिखित शब्दों के तद्‌भव रूप लिखिए :**

कर – हाथ   मुख – मुँह   मस्तक – माथा
दिवस – दिन   चंद्र – चाँद   कर्ज़ –ऋण
कदली – केला   रात्रि – रात

5. **निम्नलिखित शब्द-युग्मों में अंतर स्पष्ट कीजिए :**

धरा - धारा   दिन - दीन   तरंग - तुरंग
धरती – जल आदि की धारा   दिवस – गरीबलहर – घोड़ा
चिर - चीर   पता - पत्ता   सती - शती

दीर्घायु – वस्त्र   ठिकाना – पेड़ का पत्ता   साध्वी स्त्री – शताब्दी

6. **निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए :**

राजभक्ति – राजा की भक्ति
ममतामयी – ममता से भरी
महादेव – महान है जो देव
राजसभा – राजा की सभा
देशाटन – देश का आटन
नरसिंह – सिंह रूपी नर

7. **निम्नलिखित संबंधवाचक सर्वनामों से वाक्य बनाइए :**

जो – सो = जो करेगा सो भरेगा
वह – जो = वह जो बुरा करता है, बुरा ही फल पाता है।
जिसे – उसे = जिसे भी देखो उसे ही बुला लाओ।
जैसी – वैसी = जैसी करनी वैसी भरनी

रचनात्मक उड़ान

स्वयं कीजिए।

परख के मंच पर

1. **बच्ची बड़ी होने से क्यों डरती है? इस कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।**
   बच्ची बड़ी होने से इसलिए डरती है, क्योंकि वह हमेशा अपनी माँ के आँचल के स्नेह भरी छाया में सुख से जीना चाहती है। अपनी माँ के निकट रहकर ही उसे सच्चे सुख की अनुभूति होती है।
2. **माँ के अपार स्नेह और ममता के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिए।**
   माँ का स्नेह और उसकी ममता अमूल्य और अवर्चनीय है। बच्चे के लिए माँ का स्नेह और उसकी ममता जीवनदायी टॉनिक के समान है।
3. **"माँ की गोदी बच्चे के लिए अनुपम सुखों की सेज होती है।" इस कथन को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।**
   माँ की गोदी बच्चे के लिए अनुपम सुखों की सेज होती है, क्योंकि इसी गोद में बच्चा अपनी माँ के स्नेह और ममत्व को पाता है तथा पूर्ण सुरक्षा का अनुभव करता है। माँ की निकटता ही बच्चे को संसार के हर कष्ट, हर चिंता से मुक्त रखती है।

अध्याय - 14

जबानी बताओ

प्रश्न 1. रामरत्न की गाय का क्या नाम था?

उत्तर : रामरत्न की गाय का नाम कमला था।

प्रश्न 2. छप्पर से कैसी आवाज़ें आ रही थीं?

उत्तर : छप्पर से गाय के रंभाने की आवाज़ें आ रही थीं।

प्रश्न 3. रामरत्न के परिवार की पालनहार कौन थी?

उत्तर : रामरत्न के परिवार की पालनहार उसकी गाय थी।

प्रश्न 4. कमला का रामरत्न के परिवार में क्या स्थान था?

उत्तर : कमला का रामरत्न के परिवार में परिवार के सदस्य के समान स्थान था।

प्रश्न 5. रामरत्न के बेटे का क्या नाम था?

उत्तर : रामरत्न के बेटे का नाम दीपक था।

प्रश्न 6. बनारसी रामरत्न के घर क्यों आया था?

उत्तर : बनारसी रामरत्न के घर अपना कर्ज लेने के लिए आया था।

प्रश्न 7. सूद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : सूद का अर्थ है -ब्याज।

प्रश्न 8. कमला को देखकर बनारसी को क्या एहसास हुआ?

उत्तर : कमला को देखकर बनारसी के मन में उसे पाने के लिए लालच घर गया।

प्रश्न 9. क्या कमला बनारसी की गौशाला में जाकर खुश हुई?

उत्तर : कमला बनारसी की गौशाला में जाकर खुश नहीं हुई।

प्रश्न 10. बनारसी को अपने किस फ़ैसले पर पछतावा करना पड़ा?

उत्तर : बनारसी को गाय को अपने घर लाने वाले फ़ैसले पर पछतावा करना पड़ा।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. रामरत्न कौन था?

उत्तर : रामरत्न गाँव का एक गरीब किसान था।

प्रश्न 2. रामरत्न ने कमला को प्यार से पुचकारते हुए क्या कहा?

उत्तर : रामरत्न ने कमला को प्यार से पुचकारते हुए कहा – "कमला रानी परेशान मत हो, मुझे पता है कि तेरा बछड़ा भूखा है।

प्रश्न 3. कमला प्रत्येक वक्त कितना दूध देती थी?

उत्तर : कमला प्रत्येक वक्त बाल्टी भर दूध देती थी।

प्रश्न 4. राधा कौन थी?

उत्तर : राधा रामरत्न की बेटी थी।

प्रश्न 5. कमला की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : (1) कमला भोली -भाली गाय थी।

(2) कमला सामान्य से अधिक दूध देती थी।

प्रश्न 6. बनारसी कमला के दर्शन क्यों करना चाहता था?

उत्तर : बनारसी ने कमला की बड़ी प्रशंसा सुन रखी थी, इसीलिए वह उसके दर्शन करना चाहता था।

प्रश्न 7. कमला ने बनारसी और उसके मुंशी को देखकर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

उत्तर : कमला बनारसी तथा उसके मुंशी को देखकर अनजाने भय से ग्रस्त होकर गुर्राने लगी थी।

प्रश्न 8. बनारसी ने कमला के बदले में रामरत्न को क्या दिया?

उत्तर : बनारसी ने कमला के बदले में रामरत्न का सारा कर्ज माफ़ कर दिया।

प्रश्न 9. कमला ने रामरत्न की सोच को किस प्रकार गलत सिद्ध किया?

उत्तर : कमला ने बनारसी के घर चारे और पानी का पूरी तरह से त्याग करके रामरत्न की सोच को गलत सिद्ध कर दिया।

प्रश्न10. कमला तथा उसके बछड़े को नवजीवन कब मिला?

उत्तर : कमला और उसके बछड़े को रामरत्न के घर वापस जाकर ही नवजीवन मिला।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. रामरत्न के परिवार की आर्थिक स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : रामरत्न एक गरीब किसान था। उसे अपने परिवार को पालने के लिए अक्सर गाँव के बनिए बनारसी से कर्ज लेना पड़ता था। केवल कमला रामरत्न की गाय ही उसके परिवार का पालन-पोषण करने का खास साधन थी। परंतु बनारसी के लालच के कारण वह साधन भी उसके परिवार से छिन गया था। अत: रामरत्न का परिवार एक साधारण भारतीय किसान का परिवार था जिसकी आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी।

प्रश्न 2. बनारसी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : रामरत्न गाँव का एक धनी बनिया था। वह गरीब किसानों को कर्ज देकर उनसे बड़ा सूद तो वसूल करता ही था, साथ ही उनकी मूल्यवान वस्तुएँ भी हड़प लेता था। उसमें लालच गले तक भरा हुआ था। अपने लालच के कारण वह निर्दयी बनकर बुरे से बुरा काम आसानी से कर देता था। अत: बनारसी बुरी प्रवृत्ति वाला एक लालची व्यक्ति था।

प्रश्न 3. ''वह मात्र गाय नहीं, बल्कि मेरे परिवार की सदस्य और सबकी आँखों का नूर है।'' कहानी में सम्मिलित इस वाक्य का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भावार्थ – कमला केवल एक गाय नहीं है, बल्कि वह मेरे परिवार के सदस्य के समान अर्थात् मेरी अपनी संतान के समान है। वह मेरे परिवार के हर सदस्य के प्रेम की खास पात्र है।

प्रश्न 4. रामरत्न ने कमला की विदाई के समय अपनी पत्नी को शांत करने के लिए क्या कहा? कमला ने रामरत्न की बात को किस तरह गलत सिद्ध किया?

उत्तर : रामरत्न ने कमला को अपने घर से विदा करते हुए कहा– सुनो! इस तरह भी मत रोओ। कमला की विदाई भी एक तरह से हमारी राधा की ही विदाई समझो। हमारे घर में उस बेचारी को हमारे प्यार के अतिरिक्त सूखा चारा ही मिल पाता था। कभी-कभी तो वह भी पेट भर नहीं मिलता था। वहाँ उसे खली-बिनौले, अन्न, हरा चारा सबकुछ पेट भर मिलेगा। देखना कुछ ही दिनों में वह हमे भूल जाएगी।

किंतु कमला ने रामरत्न की इस सोच को गलत सिद्ध कर दिया, क्योंकि उसने बनारसी के घर जाकर चारे तथा

पानी दोनों का त्याग कर दिया। अंततः बनारसी को कमला रामरत्न को वापस ही लौटानी पड़ी।

प्रश्न 5. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है? इस कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि पशु भी हमारे प्रेम को समझते हैं तथा हमें उनके साथ करुणा एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। इस कहानी का संक्षिप्त सार स्वयं लिखिए।

प्रश्न 6. इस कहानी की भाषा-शैली का वर्णन सोदाहरण कीजिए।

उत्तर : रीना मुढ़ाल द्वारा रचित यह कहानी सरल तथा सरस भाषा में लिखी गई है। लेखिका ने छोटे तथा सरल शब्दों से भाषा को पठनीय रूप दिया है। कठोर तथा बोझिल शब्दों से बचकर उन्होंने कहानी की भाषा को विशेष रूप में अनोखापन दिया है। साधारण बिंबों तथा उपमाओं का प्रयोग कहानी की शैली में चार चाँद लगाता है।

भाषा मंच

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :

पति – पत्नी   गाय – बैल   सेठ – सेठानी

लड़का – लड़की   बेटा – बेटी   औरत – मर्द

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :

गाँव - ग्राम = गाँव का जीवन सादा होता है।

शांत - चुप = शांत जीवन ही सुखी जीवन है।

इच्छा - कामना = मनुष्य की इच्छा ही उसे काम करने के लिए विवश करती है।

दयालु - दया से भरा = दयालु व्यक्ति सबको प्रिय लगता है।

दिन - दिवस = दिन भर काम करने के बाद रामरत्न थक गया था।

3. निम्नलिखित में से तत्सम, तद्भव, देशी एवं विदेशी शब्द चुनिए :

तत्सम – मस्तक, ग्राम, अश्रु, सायं

तद्भव – किसान, दूध, सुबह

देशी – पगड़ी

विदेशी – मिनट, रेडियो

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :

आँखें दिखाना = क्रोध प्रकट करना – आँखें दिखाकर डराओ मत, मैं डरने वाला नहीं हूँ।

आपे से बाहर होना = क्रोध में आना – दुश्मन को घर के सामने देखते ही वह आपे से बाहर हो गया।

आड़े हाथों लेना = सख्ती बरतना – रमा ने आड़े हाथों लिया तो शीला ने सब सच-सच बता दिया।

उल्लू बनाना = मूर्ख बनाना – उसने मुझे उल्लू बनाकर मुझ से इतना सारा धन हड़प लिया।

कुहराम मचाना = शोर मचाना – भ्रष्ट राजनेता की पोल खुलने पर शहर भर में कुहराम मच गया।

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(क) पुत्र – अपना बेटा
बच्चा – कोई भी बालक

(ख) उत्साह – जोश
साहस – हिम्मत

(ग) कृपा – अपने से छोटों को सुखी करने की भावना

दया – दुखियों को सुखी करने की भावना

(घ) पत्नी – किसी की विवाहिता स्त्री।

स्त्री – कोई भी औरत

(ड़) अपराध – गैरकानूनी काम

पाप – अनैतिक कार्य

(च) बेटी – अपनी बेटी

बालिका – कोई भी लड़की

6. **निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग छाँटिए :**

अत्यधिक = अति + अधिक   अवगुण = अव + गुण
आगमन = आ : गमन   अपकार = अप + कार
उपवन = उप + वन   आजीवन = आ + जीवन
अभिज्ञान = अभि + ज्ञान   निर्भय = निर् + भय
संपूर्ण = सम + पूर्ण   सुपुत्र = सु + पुत्र

रचनात्मक उड़ान

रामरत्न भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। 'कमला' नामक इस कहानी के आधार पर भारतीय किसान के जीवन की सामान्य परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए।

भारतीय किसान गरीबी तथा संघर्ष भरे जीवन का सजीव उदाहरण है। वह कभी सूदखोरों का शिकार बनता है, तो कभी प्रकृति के प्रकोप का। परंतु फिर भी वह संघर्ष करने से पीछे नहीं हटता। इस कहानी का पात्र रामरत्न इसी प्रकार के जीवन का प्रतिनिधित्व करता दिखाई देता है। अत: 'कमला' नामक यह कहानी भारतीय किसान के जीवन का सच दर्शाती है।

परख के मंच पर

प्रश्न 1. किसान के लिए पशु उसके परिवार के सदस्यों जैसा महत्त्व रखते हैं। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? यदि हाँ, तो बताइए क्यों?

उत्तर : पशु किसान के परिवार में उसके अपने परिवार के सदस्यों जैसा महत्त्व रखते हैं, क्योंकि पशु उसके परिवार की आर्थिक दशा का आधार होते हैं अर्थात् उसकी रोजी–रोटी को चलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 2. इस कहानी में कई प्रमुख पात्र हैं। आप इस कहानी के जिस पात्र से सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : रामरत्न इस कहानी का प्रमुख पात्र है। वह एक गरीब भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। वह अपने जीवन में कष्टों और दु:खों को झेलता हुआ अपना जीवन व्यतीत करता है। उसका विभिन्न प्रकार से शोषण होता है किंतु फिर भी वह संघर्ष करते हुए पूरे विश्वास से जीवन जीता दिखाई देता है। अत: यह पात्र किसान के जीवन की समस्याओं को उजागर करता है।

प्रश्न 3. कमला के कौन–से गुणों अथवा खूबियों ने बनारसी जैसे लालची एवं निर्दयी व्यक्ति के हृदय में दया के बीज बोए और उसे अपने किए पर पछताने के लिए विवश कर दिया? बताइए।

उत्तर : कमला के निम्नलिखित गुणों से बनारसी के लालची एवं निर्दयी हृदय में दया के बीज बोए :

(1) कमला रामरत्न के परिवार से गहरा स्नेह करती थी।

(2) रामरत्न के घर से जाने के बाद उसने बनारसी के घर न तो चारा ही खाया तथा न पानी ही पिया। इस तरह बनारसी का निर्दयी हृदय कमला की स्थिति को समझने के लिए विवश हो गया।

अध्याय - 15

जबानी बताओ

प्रश्न 1. राधा-कृष्ण की लीला भूमि कौन-सी है?

उत्तर : राधा-कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन है।

प्रश्न 2. कर्नाटक की पुरानी राजधानी क्या थी?

उत्तर : कर्नाटक की पुरानी राजधानी इंद्रपुरी थी।

प्रश्न 3. कालिंदी कहाँ स्थित है?

उत्तर : कालिंदी कर्नाटक में स्थित है।

प्रश्न 4. कर्नाटक में कावेरी नदी पर कितने बाँध स्थित हैं?

उत्तर : कर्नाटक में कावेरी नदी पर 15 से अधिक बाँध स्थित हैं।

प्रश्न 5. कृष्णराज सागर बाँध की लंबाई कितनी है?

उत्तर : कृष्णराज सागर बाँध की लंबाई 185 मीटर है।

प्रश्न 6. कर्नाटक राज्य में युगांतरकारी परिवर्तन किसके कारण आया?

उत्तर : कर्नाटक राज्य में कृष्ण सागर नामक बांध के फलस्वरूप युंगातकारी परिवर्तन आया।

प्रश्न 7. 'वृंदावन गार्डन' कहाँ स्थित है?

उत्तर : वृंदावन गार्डन, मैसूर (कर्नाटक) में स्थित हैं

प्रश्न 8. डॉ. विश्वश्वरैया कौन हैं?

उत्तर : डॉ. विश्वश्वरैया आधुनिक भारत के एक महान अभियंता हैं।

प्रश्न 9. कावेरी की भव्य मूर्ति का निर्माण किस से हुआ है?

उत्तर : कावेरी की भव्य मूर्ति का निर्माण काले पत्थर से हुआ है।

प्रश्न 10. वृंदावन गार्डन पर्यटन का प्रमुख स्थल क्यों है?

उत्तर : वृंदावन गार्डन एक भव्य उद्यान होने के कारण प्रमुख पर्यटन स्थल है।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. कृष्णराज सागर बाँध बनवाने का श्रेय किसको जाता है?

उत्तर : कृष्णराज सागर बाँध बनवाने का श्रेय डॉ. विश्वश्वरैया को जाता है।

प्रश्न 2. दक्षिण भारत की गंगा कौन-सी नदी कहलाती है?

उत्तर : कावेरी दक्षिण भारत की गंगा कहलाती है।

प्रश्न 3. डॉ॰ विश्वश्वरैया को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

उत्तर : डॉ. विश्वश्वरैश्या को भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 4. कावेरी जल के सुरक्षित क्षेत्र की लंबाई क्या है?

उत्तर : कावेरी जल के सुरक्षित क्षेत्र की लंबाई 80 किमी. है।

प्रश्न 5. कृष्णराज सागर के निर्माण में कितना खर्च आया था?

उत्तर : कृष्णराज सागर के निर्माण पर लगभग सवा तीन करोड़ रुपए का खर्च आया था।

प्रश्न 6. कृष्णराज सागर से कर्नाटक के कितने गाँवों को बिजली मिलती है?

उत्तर : कृष्णराज सागर से कर्नाटक के हजारों गाँवों को बिजली मिलती है।

प्रश्न 7. कावेरी की मूर्ति के हाथ में क्या है?

उत्तर : कावेरी की मूर्ति के हाथ में अमृत कलश है।

प्रश्न 8. रात्रि को वृंदावन गार्डन के सौंदर्य में चार चाँद कौन लगाता है?

उत्तर : रात्रि को वृंदावन गार्डन के सौंदर्य में चार चाँद बिजली के रंगीन बल्ब लगाते हैं।

प्रश्न 9. कृष्णराज सागर बाँध की क्या विशेषता है?

उत्तर : कृष्णराज सागर बाँध की सबसे बडी विशेषता यह है कि यह सीमेंट के बजाय सूखी गारा से बनाया गया है।

प्रश्न 10. वृंदावन गार्डन पर्यटन का प्रमुख स्थल क्या है?

उत्तर : वृंदावन गार्डन पर्यटन हेतु एक विशाल एवं शौंदर्यपूर्ण उद्यान है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. कृष्णराज सागर बाँध के निर्माण का श्रेय किसे जाता है? उनका इसमें क्या योगदान है?

उत्तर : कृष्णराज सागर बाँध के निर्माण का श्रेय आधुनिक भारत के एक महान अभियंता डॉ. विश्वश्वरैया को जाता है। उनकी अपनी सूझबूझ और अनोखी कल्पना के परिणामस्वरूप ही बाँध का निर्माण हो सका। वे कर्नाटक के प्रधान अभियंता थे। उन्हें भारत सरकार ने उनके द्वारा किए महान कार्यों के कारण ही 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया था।

प्रश्न 2. 'वृंदावन गार्डन' का पर्यटन संबंधी क्या महत्त्व है? पाठ में सम्मिलित जानकारी के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : वृंदावन गार्डन का पर्यटन संबंधी विशेष महत्त्व है। यह एक भव्य गार्डन है जिसका सौंदर्य अनुपम है। इस गार्डन के मध्य से कावेरी की पवित्र धारा निरंतर बहती रहती है। इसमें प्राकृतिक सौंदर्य के अतिरिक्त सुंदर सांस्कृतिक विरासत भी मौजूद है जिसके सौंदर्य के दर्शन के लिए लोग दूर-दूर से चले आते हैं। इस गार्डन का सौंदर्य इंद्रलोक के समान है। अत: वृंदावन गार्डन का पर्यटन के रूप में विशेष महत्त्व है।

प्रश्न 3. कृष्णराज सागर बाँध का कर्नाटक के लिए क्या महत्त्व है?

उत्तर : कृष्णराज सागर बाँध कर्नाटक के लिए विशेष महत्त्व रखता है। इसके निर्माण ने कर्नाटक राज्य में युगांतकारी परिवर्तन ला दिया है। इसने राज्य के लहलाते खेतों की सिंचाई के लिए पानी तो उपलब्ध करवाया ही है साथ ही हजारों गाँवों को बिजली भी उपलब्ध करवाई है। इसके साथ ही इसने औद्योगिक विकास में विशेष योगदान दिया है। अत: हम कह सकते हैं कि कृष्णराज सागर बाँध कर्नाटक राज्य के लिए विशेष महत्त्व रखता है।

भाषा मंच

1. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :**

राजधानी – राजधानियाँ
उपाधि – उपाधियाँ
मिट्टी – मिट्टियाँ
दीवार – दीवारें
सड़क – सड़कें
भूमि – भूमियाँ
चौड़ाई – चौड़ाइयाँ
सीढ़ी – सीढ़ियाँ
नदी – नदियाँ
धारा – धाराएँ
लंबाई – लंबाइयाँ
नाव – नावें

2. **'उपवन' शब्द में 'उप' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। 'उप' का अर्थ है– छोटा।**
इसके योग से बनने वाले कुछ अन्य शब्द :

प्रधानाचार्य – उपप्रधानाचार्य **प्रधानमंत्री – उपप्रधानमंत्री**

अब आप भी 'उप' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए तीन अन्य शब्द बनाइए:

उप – उपराष्ट्रपति उप – उपाध्यक्ष उप – उपकार

3. **निम्न शब्दों में 'इत' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है :**

निर्मित, सम्मानित

अब 'इत' प्रत्यय के प्रयोग से कोई तीन अन्य शब्द बनाइए :

भ्रमित आलौकित शोभित

4. **निम्नलिखित शब्द समूहों से वाक्य बनाइए :**

चार चाँद लगाना : राम की नौकरी ने उसके परिवार की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए।
अग्रसर करना : कृष्णसागर बाँध ने कर्नाटक की उन्नति की ओरअग्रसर किया।
स्वप्नलोक-सा : वृंदावन गार्डन का सौंदर्य स्वप्नलोक-सा लगता है।
जाल-सा बिछना : राज्य में नहरों का जाल-सा बिछा है।
इंद्रधनुष का जाल : इंद्रधनुष का जाल देखते ही बनता था।

5. **निम्नलिखित के विलोम लिखिए :**

स्थिर = अस्थिर उत्तर = प्रश्न जन्म = मृत्यु
स्थल = जल निरंतर = अनिरंतर आनंद = कष्ट

प्रश्न 1. पर्यटन से आप क्या समझते हैं? पर्यटन के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : दर्शनीय स्थलों पर बड़ी संख्या में लोगों का आना-जाना या उनका भ्रमण ही पर्यटन कहलाता है। पर्यटन किसी भी स्थान, प्रांत या देश के लिए विशेष महत्त्व रखता है। पर्यटन से सरकार को खासी आमदनी होती है तथा साथ ही आसपास की जनता को भी रोजगार प्राप्त होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पर्यटन किसी भी प्रांत अथवा राष्ट्र की आर्थिकी में विशेष योगदान प्रदान करता है।

प्रश्न 2. वृंदावन गार्डन के प्राकृतिक सौंदर्य को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर : वृंदावन गार्डन एक अद्‌वितीय उपवन है। यह सौंदर्य-प्रियता की त्रिवेणी का अनूठा सम्मिश्रण है। इसमें तरह-तरह के पेड़-पौधे तो विद्‌यमान हैं। साथ ही विविध प्रकार के फुव्वारे तथा मूर्तियाँ भी विद्‌यमान हैं। इसमें कावेरी की सुंदर एवं भव्य मूर्ति भी विद्‌यमान है। इस मूर्ति के हाथ में एक अमृत कलश है जिससे कावेरी की पवित्र जल धारा निरंतर बहती रहती है। रात्रि के समय तो इस उपवन की छटा ही निराली होती है। अतः वृंदावन गार्डन अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व भर में जाना जाता है।

प्रश्न 3. किसी ऐसे पर्यटन स्थल के बारे में बताइए जिसकी यात्रा आप कर चुके हैं तथा वह आपको पसंद है।

उत्तर : स्वयं कीजिए।

अध्याय - 16

जबानी बताओ

प्रश्न 1. कवि ने यह कविता क्यों लिखी होगी?

उत्तर : कवि ने मानव समाज का मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से यह कविता लिखी है।

प्रश्न 2. कवि विश्व में कैसा परिवर्तन चाहता है?

उत्तर : कवि विश्व में जाति और धर्म के भेदभाव रहित समाज को देखना चाहता है।

प्रश्न 3. क्या आपको लगता है कि ऐसे परिवर्तन होने चाहिए?

उत्तर : हाँ, ऐसे परिवर्तन मानव-समाज के लिए कल्याणकारी होते हैं।

प्रश्न 4. पुरानी परंपराएँ क्या बहुत बुरी होती हैं?

उत्तर : सभी पुरानी परंपराएँ बुरी नहीं होती हैं।

प्रश्न 5. एक दृष्टि से देखने से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : एक दृष्टि से देखने का तात्पर्य समाज में समता की स्थापना करना है।

प्रश्न 6. ऊँचा उठना क्या होता है?

उत्तर : ऊँचा उठना रूढ़िवादी सोच से मुक्त होकर आधुनिक विचारों को ग्रहण करना है।

प्रश्न 7. इस कविता की भाषा कैसी है?

उत्तर : इस कविता की भाषा सरल तथा सरस है।

प्रश्न 8. गतिमय बनने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : गतिमय बनने से तात्पर्य विकास के मार्ग पर आगे बढ़ते जाना है।

प्रश्न 9. मौलिक शब्द से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : मौलिक शब्द से तात्पर्य मूल शब्दों से हैं।

प्रश्न10. कवि किस वस्तु का सृजन करने को कह रहा है?

उत्तर : कवि धरती पर स्वर्ग का सृजन करने को कह रहा है।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. अतीत से कितना लेना चाहिए?

उत्तर : अतीत से उतना ही लेना चाहिए जितना कि पोषक हो।

प्रश्न 2. कवि कौन से बंधन तोड़ना चाहता है?

उत्तर : कवि रूढ़िवादी विचारों के बंधन तोड़ना चाहता है।

प्रश्न 3. नया हाथ क्या है?

उत्तर : नए हाथ से तात्पर्य नई सृजनात्मक दृष्टिकोण से है।

प्रश्न 4. यह कविता आपको कैसी लगी?

उत्तर : यह कविता बहुत अधिक प्रेरणात्मक है।

प्रश्न 5. कवि कौन-सा भाव उत्पन्न करना चाहता है?

उत्तर : कवि समता अथवा समानता का भाव उत्पन्न करना चाहता है।

प्रश्न 6. हमारे समाज में कौन-कौन से द्वेष व्याप्त हैं?

उत्तर : हमारे समाज में धार्मिक व जाति आदि से संबधित अनेक भेदभाव व्याप्त हैं।

प्रश्न 7. मलय पवन क्या है?

उत्तर : मलय पवन का तात्पर्य मलय पर्वत की तरफ से आने वाली पवनें है।

प्रश्न 8. भाषा को क्या देना है?

उत्तर : भाषा को नूतन अक्षर देना है।

प्रश्न 9. किसकी नई मूर्ति बनानी है?

उत्तर : इस युग की नई मूर्ति बनानी है।

प्रश्न10. मौलिक कौन है?

उत्तर : सृजन ही मौलिक है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. कवि क्या-क्या परिवर्तन समाज में करना चाहता है?

उत्तर : कवि पुराने रूढ़िवादी एवं भेदभावपूर्ण समाज में परिवर्तन कर एक आधुनिक तथा समता अथवा समानतापूर्ण समाज की स्थापना करना चाहता है। अत: वह समाज में जाति-पाती, धर्म-मत आदि भेदभावों में परिवर्तन चाहता है और नए समाज का निर्माण करना चाहता है।

प्रश्न 2. 'देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से' इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर : इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि हमें समाज में व्याप्त सभी प्रकार के भेदभावों को भूलकर सबको एक दृष्टि से देखना चाहिए अथवा सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 3. हमें पुरानी परंपराएँ क्यों बदलनी चाहिए?

उत्तर : हमारी अधिकांश पुरानी परंपराएँ रूढ़िवादी एवं भेदभावपूर्ण हैं। ऐसी परंपराएँ मनुष्य, समाज व राष्ट्र की प्रगति में बाधक बनती हैं। अत: समाज मानव व राष्ट्र में समानता की भावना का प्रसार कर आगे बढ़ाने के लिए पुरानी परंपराओं को बदलना अनिवार्य है।

प्रश्न 4. हम कैसे इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं?

उत्तर : हम जाति-पाति, धर्म, गोरे-काले, ऊँच-नीच आदि के भेदभाव मिटाकर समाज में समानता या बराबरी की भावना उत्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से उन्नति करने के अवसर प्राप्त होगे तथा धरती वास्तव में स्वर्ग बन जाएगी।

प्रश्न 5. किसी एक क्रांति के बारे में बताइए।

उत्तर : 1917 में रूस में तानाशाही व्यवस्था थी जिसमें मजदूरों का गंभीरता से शोषण किया गया जाता था। समाज विविध प्रकार से भेदभावों से ग्रस्त था। किंतु वहाँ की जनता ने 1917 में लेनिन के नेतृत्व महान क्रांति की तथा तानाशाही व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंका। उसके बाद वहाँ भेदभावों से मुक्त व्यवस्था की स्थापना की गई।

भाषा-मंच

1. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

कमल – जलज, पंकज, नीरज
गगन – आकाश, अंबर, व्योम
हरि – भगवान, ईश्वर, परमात्मा
हाथ – हस्त, कर, बाहु
पवन – हवा, वायु, अनिल
धरा – धरती, भू, भूमि
चंद्रमा – चंद्र, चाँद, शशि

सूर्य – सूरज, रवि, दिनकर

2. **नीचे लिखी पंक्तियों में शब्दों पर ध्यान दीजिए :**

एक दृष्टि से - भाव वृष्टि से	स्वर दो - अक्षर दो
रूप सँवारो - रंग उभारो	रुके न चिंतन - सत्य परिवर्तन

इन सभी में 'लय' तथा 'तुक' है। 'लय' एवं 'तुक' को कविता का प्रथम गुण माना जाता है। कविता में से तुकांत शब्द छाँटिए तथा नीचे लिखिए :

गगन – पवन, जितना – उतना धरा – धारा साथ – हाथ

3. **किसी शब्द के अंत में 'ई' या 'ऊ' हो, तो बहुवचन बनाते समय यह 'इ' या 'उ' में बदल जाता है। जैसे-**

कहानी = कहानियाँ आलू = आलुओं

इसी प्रकार के पाँच शब्द लिखिए :

टहनी – टहनियाँ रागनी – रागनियाँ घोड़ा – घोड़ों

साधु – साधुओं

अध्याय - 17

जबानी बताओ

प्रश्न 1. कविता में टूटा पहिया किसका प्रतीक है?

उत्तर : कविता में टूटा पहिया एक महत्त्वपूर्ण हथियार का प्रतीक है।

प्रश्न 2. चक्रव्यूह से निकल पाना मुश्किल क्यों होता है?

उत्तर : चक्रव्यूह में हथियारबंद सैनिकों के विभिन्न घेरे होते हैं जिनसे लड़ते हुए ही चक्रव्यूह से बाहर निकला जा सकता है। अत: चक्रव्यूह से निकलना मुश्किल होता है।

प्रश्न 3. कविता के अनुसार अपने पक्ष को असत्य जानने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : कविता के अनुसार अपने पक्ष को असत्य जानने से तात्पर्य अपने पक्ष की कमज़ोरी को जानते हुए भी दुश्मन से टक्कर लेना हैं

प्रश्न 4. महारथियों के पास कौन-से शक्तिशाली हथियार होते हैं?

उत्तर : महारथियों के पास ब्रह्मास्त्रों जैसे शक्तिशाली हथियार होते हैं।

प्रश्न 5. रथ का टूटा पहिया क्या संदेश देता है?

उत्तर : रथ का टूटा पहिया किसी छोटी से छोटी चीज़ का सहारा लेकर भी दृढ़ता से आगे बढ़ने का संदेश देता है।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. रथ का टूटा हुआ पहिया क्या कहता है?

उत्तर : रथ का टूटा पहिया कहता है कि उसे बेकार समझकर फेंको मत, समय आने पर वह भी हथियार के रूप में काम आ सकता है।

प्रश्न 2. टूटा हुआ पहिया हमारे किस काम आ सकता है?

उत्तर : टूटा हुआ पहिया विपत्ति के समय दुश्मन का सामना करने के लिए हथियार के रूप में काम आ सकता है।

प्रश्न 3. अभिमन्यु को कवि ने दुस्साहसी क्यों कहा?

उत्तर : अभिमन्यु को कवि ने दुस्साहसी इसीलिए कहा, क्योंकि वह चक्रव्यूह को पूरी तरह से तोड़ने का ज्ञान न रखते हुए भी वह चक्रव्यूह में घुस जाता है।

प्रश्न 4. टूटा हुआ पहिया विपत्ति के समय किससे लोहा लेने के काम आ सकता है?

उत्तर : टूटा हुआ पहिया विपत्ति के समय कौरव सेना से लोहा लेने के काम आ सकता है।

प्रश्न 5. टूटा हुआ पहिया स्वयं को न फेंकने की बात क्यों कहता है?

उत्तर : टूटा पहिया स्वयं को न फेंकने की बात इसलिए कहता है, क्योंकि वह युद्ध भूमि में अपना कुछ विशेष महत्त्व समझता है।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. टूटा पहिया किसका प्रतीक है? कवि इस प्रतीक के माध्यम से क्या स्पष्ट करना चाहता है?

उत्तर : रथ का टूटा पहिया अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देने वाले अभिमन्यु के खास अस्त्र का प्रतीक है। कवि इसके माध्यम से स्पष्ट करना चाहता है कि टूटा पहिया भले ही बेकार की वस्तु है, किंतु चक्रव्यूह में फँसे अभिमन्यु के

लिए यह विशेष हथियार का काम कर सकता है तथा दुश्मन को मात देने में उसकी सहायता कर सकता है।

प्रश्न 2. अकेली निहत्थी आवाज़ और ब्रह्मास्त्रों से क्या तात्पर्य है , स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस कविता के अनुसार अकेली निहत्थी आवाज़ से तात्पर्य अभिमन्यु से है जो कौरव सेना द्वारा रचित चक्रव्यूह में फँस जाता है और निहत्था ही उनके हाथों में विद्यमान ब्रह्मास्त्रों अर्थात् प्राण घातक हथियारों का सामना करने के लिए विवश हो जाता है।

प्रश्न 3. धर्मवीर भारती की इस कविता का सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर : यह कविता महाभारत के युद्ध पर आधारित है। इसमें उस समय की घटना का वर्णन मिलता है जब अकेला तथा निहत्था अभिमन्यु कौरव सेना द्वारा रचित चक्रव्यूह में फँस जाता है। उसके चारों ओर कौरव सेना के बड़े-बड़े महारथी होते हैं और उनके हाथों में ब्रह्मास्त्रों जैसे प्राणघातक हथियार होते हैं। इस स्थिति में जब अभिमन्यु के पास कोई भी हथियार नहीं होता तो वह रथ के टूटे पहिए को ही अपना हथियार बनाकर शत्रु सेना को ललकारता है तथा उनके ब्रह्मास्त्रों का वीरता से सामना करता है।

प्रश्न 4. यह कविता जीवन के किस पक्ष को स्पष्ट करती है , बताइए।

उत्तर : यह कविता जीवन के संकटपूर्ण पक्ष को स्पष्ट करती है। कवि के अनुसार जीवन में ऐसा समय भी आता है जब मनुष्य अपने आपको चारों तरफ से विपत्तियों या समस्याओं से घिरा पाता है। ऐसी अवस्था में उसे हार मानने की बजाय अभिमन्यु की भाँति रथ के टूटे पहिए जैसी तुच्छ वस्तु का सहारा लेकर विपत्तियों पर सफलता पाने के लिए संघर्ष करना चाहिए। संघर्ष करके समस्याओं से बाहर निकलने का प्रयास करना ही सच्चा मानव धर्म है।

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

पहिया – पहिए सेना – सेनाएँ आवाज़ – आवाजें
गति – गतियाँ रानी – रानियाँ पंखा – पंखे
महारथी – महारथियों कुर्सी – कुर्सियो

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :

वीर – वीरांगना राजा – रानी पत्नी – पति
शेर – शेरनी नाई – नाइन पंडित – पंडिताइन
धोबी – धोबिन नेता – नेत्री

3. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए :

दुरुह – दुरूह चक्करव्यूह – चक्रव्यूह पहीया – पहिया
निहथ्थी – निहत्थी ब्राह्मास्त्र – ब्रह्मास्त्र सामुहिक – सामूहिक

4. निम्नलिखित के संधि-विच्छेद कीजिए :

दुरुपयोग – दुर् + उपयोग चक्रव्यूह – चक्र + व्यूह
मनोभाव – मनः + भाव अधोगति – अधः + गति
सच्चरित्र – सत् + चरित्र परोपकार – पर + उपकार

5. निम्नलिखित प्रत्ययों से शब्द बनाइए :

दार दुकानदार थानेदार हवादार जमादार
त्व देवत्व पुरुषत्व नारीत्व स्त्रीत्व

पन	लड़कपन	बालपन	अपनापन	अल्हड़पन
ईन	रंगीन	नमकीन	संगीन	आस्तीन
ईय	दर्शनीय	दयनीय	जातीय	सहनीय

परख के मंच पर

प्रश्न 1. आधुनिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए सोचिए तथा बताइए कि 'टूटा पहिया' नामक कविता का मूल संदेश क्या हो सकता है?

उत्तर : आधुनिक परिवेश में टूटा पहिया नामक कविता का संदेश हो सकता है – जीवन रूपी महाभारत के संघर्ष में कठोर परिस्थितियों के सामने झुकने के बजाय उनका धैर्य से मुकाबला कर उन पर जीत हासिल करने का प्रयास करना।

प्रश्न 2. अभिमन्यु महाभारत का एक पात्र है। बताइए आप इसके बारे में क्या जानते हैं?

उत्तर : अभिमन्यु अर्जुन का वीर पुत्र था। वह चक्रव्यूह को तोड़ने की विद्या का अधूरा ज्ञान रखता था। फिर भी महाभारत के युद्ध के दौरान उसने कौरवों द्वारा रचाए गए चक्रव्यूह को तोड़ने का प्रयत्न पूरे साहस और हौंसले के साथ किया था। उसकी वीरता की बड़े-बड़े योद्धाओं ने मन से प्रशंसा की थी।

अध्याय - 18

जबानी बताओ

प्रश्न 1. शिवाजी कौन थे?

उत्तर : शिवाजी प्रसिद्ध मराठा वीर थे।

प्रश्न 2. शिवाजी के सेनापति का नाम क्या था?

उत्तर : शिवाजी के सेनापति का नाम आवाजी सोनदेव था।

प्रश्न 3. शिवाजी कहाँ बैठे हुए थे?

उत्तर : शिवाजी राजगढ़ के दुर्ग में बैठे हुए थे।

प्रश्न 4. सहयाद्रि के शिखर कहाँ से दिखाई दे रहे थे?

उत्तर : दुर्ग के बायीं तरफ से सहयाद्रि के शिखर दिखाई दे रहे थे।

प्रश्न 5. मोरोपंत कैसा व्यक्ति था?

उत्तर : मोरोपंत पिंगले अधेड़ अवस्था का गेहुएँ रंग का ऊँचा पूरा व्यक्ति था।

प्रश्न 6. शिवाजी की पगड़ी कैसी थी?

उत्तर : शिवाजी की पगड़ी मुग़ल ढंग की थी।

प्रश्न 7. शिवाजी मोरोपंत की तरफ उत्सुकता से क्यों देख रहे थे?

उत्तर : मोरोपंत आवाजी सोनदेव की जीत का संदेश लेकर आए थे। इसीलिए शिवाजी उनकी तरफ उत्सुकता से देख रहे थे।

प्रश्न 8. शिवाजी ने आवाजी को किस बात पर बधाई दी?

उत्तर : शिवाजी ने आवाजी को कल्याण प्रांत पर विजय पाने पर बधाई दी।

प्रश्न 9. आवाजी सोनदेव ने सूबेदारों का काम कैसा बताया?

उत्तर : आवाजी सोनदेव ने सूबेदारों का काम प्रंशसनीय बताता है।

प्रश्न10. आवाजी सोनदेव शिवाजी के लिए क्या उपहार लेकर आए थे?

उत्तर : आवाजी सोनदेव शिवाजी के लिए कल्याण के सूबेदार अहमद की पुत्रवधू को उपहार के रूप में लेकर आए थे।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. दालान के सामने क्या स्थित है?

उत्तर : दालान के सामने किले का खुला मैदान स्थित था।

प्रश्न 2. आवाजी सोनदेव किस प्रांत को जीत कर लौटे थे?

उत्तर : आवाजी सोनदेव कल्याण प्रांत को जीतकर लौटे थे।

प्रश्न 3. हम्मालों के झुंड के पीछे क्या था?

उत्तर : हम्मालों के झुंड के पीछे पालकी थी।

प्रश्न 4. आवाजी सोनदेव शिवाजी को क्या बताता है?

उत्तर : आवाजी सोनदेव शिवाजी को पालकी के रूप लाए गए उपहार के बारे में बताता है।

प्रश्न 5. शिवाजी मालवियों के बारे में क्या पूछते हैं?

उत्तर : शिवाजी मालवियों की वीरता के बारे में पूछते हैं।

प्रश्न 6. शिवाजी घुड़सवारों के बारे में क्या पूछते हैं?

उत्तर : शिवाजी घुड़सवारों की वीरता के बारे में पूछते हैं।

प्रश्न 7. आवाजी सोनदेव ने लूट का माल क्या-क्या बताया?

उत्तर : आवाजी सोनदेव लूट के माल के बारे में बताते हैं कि उन्होंने बड़ा खजाना तो लूटा है ही, साथ ही वह शिवाजी के लिए भी अमूल्य उपहार लेकर आए हैं।

प्रश्न 8. कल्याण के सूबेदार का क्या नाम था?

उत्तर : कल्याण के सूबेदार का नाम अहमद था।

प्रश्न 9. पालकी में कौन था?

उत्तर : पालकी में कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधू थी।

प्रश्न10. शिवाजी ने कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधू से माफ़ी क्यों माँगी?

उत्तर : शिवाजी औरत के सम्मान को सर्वाधिक महत्त्व देते थे। इसलिए उन्होंने अपने सेनापति द्वारा एक औरत का बलपूर्वक अपहरण करके उसके सामने पेश करने पर बहुत अधिक लज्ज़ा महसूस हुई और उसने सूबेदार की पुत्रवधू से अपने सेनापति की गलती के लिए माफ़ी माँगी।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. इस एकांकी के आधार पर शिवाजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : इस एकांकी के आधार पर शिवाजी एक उदार ह्रदयी तथा नेक व्यक्ति थे। वे जितना अधिक विश्वास अपने राज्य की जनता की सेवा व राज्य के विस्तार में विश्वास रखते थे, उससे कहीं अधिक विश्वास नारी जाति के सम्मान में रखते थे। वे दुश्मन की पत्नी को भी अपनी बहन या माता के समान इज्ज़त प्रदान करते थे। अत: हम कह सकते हैं कि शिवाजी एक ऐसे सच्चे योद्धा थे जो नारी जाति को अपने प्राणों से अधिक सम्मान देते थे।

प्रश्न 2. सूबेदार अहमद की पुत्रवधू को उठा लाने पर, सेनापति को शिवाजी ने जो कुछ कहा उसका संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर : शिवाजी ने सेनापति को कहा – आवाजी तुमने ऐसा काम किया है जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। शिवाजी के लिए पर-स्त्री तो केवल माता के समान है। शिवाजी स्त्री का दिल से सम्मान करता है। तुमने स्त्री का अपमान करके शिवाजी का सिर शर्म से ज़मीन में गड़ा दिया है। यदि तुम्हारे स्थान पर और कोई व्यक्ति ऐसा करता तो अब तक उसका सिर धड़ से अलग कर दिया होता। अत: भविष्य में ऐसा काम करने का विचार भी मन में मत लाना।

प्रश्न 3. इस एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : शिवाजी का सेनापति आवाजी सोनदेव कल्याण प्रांत के सूबेदार अहमद पर विजय प्राप्त करके उसके समस्त खजाने के साथ-साथ उसकी पुत्रवधू को भी अपने साथ शिवाजी को उपहार के रूप में देने के लिए अपहृत करके ले आता है। शिवाजी उसकी विजय पर तो बहुत खुश होता है, किंतु अहमद की पुत्रवधू को देखकर अपने सेनापति की करतूत पर बेहद लज्ज़ित होता है तथा अपने सेनापति को बहुत अधिक बुरा-भला कहता है। फिर वह अहमद की पुत्रवधू को ससम्मान वापस लौटा देता है।

प्रश्न 4. इस एकांकी के आधार पर मोरोपंत का चरित्र बताइए।

उत्तर : मोरोपंत का पूरा नाम मोरोपंत पिंगले था। वे शिवाजी के राज्य के पेशवा थे। वे अधेड़ उम्र के गेहूएँ रंग के ऊँचे कद वाले संपूर्ण व्यक्ति थे। उनकी वेशभूषा शिवाजी से मिलती-जुलती होती थी। केवल पगड़ी ही ऐसी होती थी जिसमें कुछ अंतर दिखाई देता था। वे शिवाजी नजदीकी लोगों में से एक थे।

प्रश्न 5. शिवाजी की सेना की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

उत्तर : शिवाजी की सेना एक विशाल तथा कुशल सेना थी। उनकी सेना में पैदल सैनिक, घुड़सवार आदि सम्मिलित होते थे। सभी अपने सेना नायक के नेतृत्व में अपनी पूरी ताकत से लड़ते थे। शिवाजी की सेना में शामिल सैनिकों की एक खास विशेषता यह थी कि वे गोरिल्ला युद्ध प्रणाली में विशेष रूप से कुशल होते थे तथा बड़े-बड़े योद्धाओं को उन से मुँह की खानी पड़ती थी।

भाषा मंच

1. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :**

छत – छतें   सेना – सेनाएँ   लड़की – लड़कियाँ
पालकी – पालकियाँ   पंखा – पंखे   किताब – किताबें   बहू – बहुएँ
औरत – औरतें

2. **निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए :**

शरीर – तन, देह, काया
अँधेरा – अधंकार, तम, तिमिर
इच्छा – आकांक्षा, मनोकामना, चाह
सूर्य – सूरज, रवि, दिवाकर
घर – गृह, निकेतन, आलय

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :**

चिड़िया – चिड़ा   स्वामी – स्वामिनी   नर – नारी
सिंह – सिंहनी   लोटा – लुटिया   पतीला – पतीली
घड़ा – घड़ी   माली – मालिन

4. **निम्नलिखित विशेषणों को भाववाचक संज्ञा में बदलिए :**

आदमी – आदमियत   जवान – जवानी   पंडित – पडिताई
दयालु – दयालुता   क्रोधी – क्रोध   ऊँचा – ऊँचाई   अच्छा – अच्छाई
सुंदर – सुंदरता   बूढ़ा – बुढ़ापा
बच्चा – बचपन   मूर्ख – मूर्खता   मित्र – मित्रता

5. **निम्नलिखित के विरीतार्थक शब्द लिखिए :**

वीरता – दुर्बलता   प्रशंसा – बुराई   ठंडा – गरम
नेक – बुरा   समान – असमान   घबराहट – शांति
सुंदर – असुंदर   बड़ा – छोटा

6. **निम्नलिखित में से अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाएँ छाँटकर अलग कीजिए:**

अकर्मक क्रिया – हँसना, दौड़ना, बैठना, जगना, सोना, भागना, जाना, आना

सकर्मक क्रिया – लिखना, पीना, बताना, कटना, पढ़ना

7. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य पहचानिए :

(क) मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। (कर्तृवाच्य)

(ख) मुझसे दौड़ा नहीं जाता। (भाववाच्य)

(ग) मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ? (कर्तृवाच्य)

(घ)तिरुक्कुरल को तमिल भाषा का वेद माना जाता है।(कर्मवाच्य)

8. निम्नलिखित वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द लिखिए :

(क) जो पहले हो चुका हो भूतपूर्व

(ख) अच्छे आचरण वाला सदाचारी

(ग) ईश्वर को मानने वाला आस्तिक

(घ)जिसमें संदेह न हो निस्संदेह

(ङ) जो ऊपर कहा गया हो उपर्युक्त

9. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :

(क) कोल्हू का बैल – बहुत अधिक मेहनती

जीवन की गाड़ी चलाने के लिए कोल्हू का बैल बनना पड़ता है।

(ख) कान भरना – चुगली करना।

कान भरने वाले मित्रों से बचकर रहना चाहिए।

(ग) एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना – पूरी कोशिश करना।

उसने एड़ी-चोटी का जोर लगाया मगर वह परीक्षा में फिर भी फेल हो गया

(घ)आँखों का तारा – बहुत प्यारा।

प्रतीक अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

परख के मंच पर

प्रश्न 1. शिवाजी ने अहमद की पुत्रवधू से माफ़ी माँगी। क्या किसी दुश्मन की स्त्री से माफ़ी माँगना उचित था? बताइए।

उत्तर : शिवाजी एक वास्तविक योद्धा तथा उदार इंसान थे। वे अपने शत्रु का सामना पूरी ताकत से करते थे। परंतु स्त्री तथा बच्चे चाहे अपने हो या शत्रु के उनके लिए समान होते थे। वे स्त्री जाति का सम्मान हृदय से करते थे। उनकी दृष्टि में पर-स्त्री उनकी माता या बहन के समान थी। अत: दुश्मन की स्त्री से माफी माँगना उनके लिए पूर्णत: उचित ही था।

अध्याय-19

जबानी बताओ

प्रश्न 1. खुशामद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : खुशामद का तात्पर्य मिथ्या प्रशंसा है।

प्रश्न 2. खुशामदी का दूसरे व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : खुशामदी का दूसरे व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 3. खुशामदी आदमी दूसरों की किस तरह खुशामद करता है?

उत्तर : खुशामदी आदमी दूसरों की झूठी प्रशंसा या तारीफ करता है।

प्रश्न 4. खुशामद से आपके क्या-क्या काम हल हो सकते हैं?

उत्तर : खुशामद से हमारे बहुत से काम हल हो सकते हैं।

कलम उठाओ

इन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

प्रश्न 1. खुशामद शब्द किस भाषा का है?

उत्तर : खुशामद शब्द फ़ारसी भाषा का है।

प्रश्न 2. आजकल खुशामदी होना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : अपने काम निकलवाने के लिए खुशामदी होना आवश्यक है।

प्रश्न 3. खुशामदी व्यक्ति की क्या विशेषता होती है?

उत्तर : खुशामदी व्यक्ति मीठे वचन बोलने तथा झूठी बड़ाई करने में सक्षम होता है।

प्रश्न 4. लेखक खुशामद के क्या लाभ बताते हैं?

उत्तर : लेखक खुशामद के अनेक लाभ बताता है जैसे –

(1) खुशामद से बड़े लोग शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं।
(2) खुशामद से रुके हुए काम बन जाते हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

प्रश्न 1. खुशामद न करने वालों के बारे में लेखक का क्या विचार है?

उत्तर : खुशामद न करने वालों के बारे में लेखक कहता है कि ऐसे लोगों की चतुराई बेकार है। भले ही ऐसे व्यक्ति पढ़े-लिखे, गुणी, नम्र, सुशील आदि क्यों न हो पर खुशामद की कला के बारे में न जानने के कारण इस संसार में उनका आसानी से गुज़र-बसर हो पाना नामुमकिन है।

प्रश्न 2. इस पाठ के व्यंग्य को अपने शब्दों में स्पष्ट करो।

उत्तर : इस पाठ के व्यंग्य से स्पष्ट होता है कि आज का ज़माना खुशामद का ज़माना है। इस युग में व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा गुणी, शिक्षित एवं चतुर या चालक क्यों न हो, किंतु खुशामद की कला के ज्ञान के अभाव में वह मूर्ख ही है। वह कोई भी कार्य सफलतापूर्वक संपन्न नहीं कर सकता। अत: आज व्यक्ति को सुखी व संपन्न बनने के लिए खुशामदी होना अनिवार्य है।

भाषा मंच

1. **भाववाचक संज्ञा बनाइए :**

सहृदय – सहृदयी
योगी – योग
प्रशंसक – प्रंशसा
निर्दोष – निर्दोषी
वैरागी – वैराग्य
मर्द – मर्दानगी
निडर – निडरता
कपटी – कपट
अच्छा – अच्छाई

2. **निम्नलिखित के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :**

मिजाज – स्वभाव = मिजाज को शांत रखना ही बेहतर है।
करामाती – चमत्कारी = करामाती लोग ही पहचान बना पाते हैं।
तिलांजलि – तर्पण करना = उसने अपने सभी सुखों की तिलांजलि दे दी।
कंजूस – कृपण = कंजूस लोग किसी का सहारा नहीं बन सकते।

रचनात्मक उड़ान

स्वयं कीजिए

परख के मंच पर

‘शीघ्र प्राण हरनेवाला विष पीना अच्छा है, किसी कुटिल मुखवाले धनाढ्य का क्रोध सहना अच्छा नहीं।’ इस कथन की व्याख्या कीजिए।

इस व्यंग्य के अनुसार व्यंग्यकार कहता है कि किसी धनी व्यक्ति के क्रोधपूर्ण वचनों को सहने के बजाय विष पीकर जान दे देना अच्छा है।

p